समाचार दर्पण 24.

आमंत्रण मूल्य
15*

1 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2023

पठनीय और संग्रहणीय सामग्रियां... संपूर्ण पारिवारिक पत्रिका

१ अक्सेटूबर से ३१ अक्टूबर 2023

UDYAM-PB-12-0089227

समाचार दर्पण 24

हिंदी पाक्षिक

प्रधान संपादक
अनिल अनूप

कार्यकारी संपादक
मोहन द्विवेदी

प्रबंध उप संपादक
दुर्गा प्रसाद शुक्ला

विशेष सलाहकार
आत्माराम त्रिपाठी

संवाद व्यवस्था
चुन्नीलाल प्रधान

समाचार संपादक
अंजनी कुमार त्रिपाठी

राजस्थान ब्यूरो
सुरेन्द्र प्रताप सिंह

टीम सहयोगी
टिक्कू आपचे, रामनरेश चौरसिया,
सुमन कश्मीरी, राधेश्याम पुरवैया, सीता देवी, शगुन सिंह, उर्मिला थापर, आर के मिश्रा

कार्यालय संवाददाता
आरती शर्मा, सुखविंदर सिंह, सीमा यादव, रेखा गुप्ता

उप संपादक
आनंद शर्मा

विज्ञापन प्रभारी
सर्वेश द्विवेदी

विशेष संवाददाता
इरफान अली लारी

कला संपादक
मनमोहन उपाध्याय

संवाद सहयोगी
इरफान अली (देवरिया), प्रशांत झा(बिहार), अब्दुल मोबीन सिद्दीकी (यूपी), राम अवतार जांगिड़ (राजस्थान), विरेन्द्र हरखानी (जोधपुर) शंकर यादव (छत्तीसगढ़), मिश्रीलाल कोरी (नेपाल), हरिंदर सिंह (मध्य प्रदेश), परिमल(गुवाहाटी), मनोज उनियाल (हिमाचल), अरमान अली (जम्मू कश्मीर), राकेश सूद (पंजाब), ईसम सिंह (हरियाणा), इरफान (महाराष्ट्र), ममता कटारिया (गुजरात), गुफरान (कतर), सचिन बहलोल(बहरीन),

आगरा मंडल प्रभारी
ठाकुर धर्म सिंह ब्रजवासी

हरियाणा प्रभारी
ब्रजकिशोर सिंह

छत्तीसगढ़ ब्यूरो
हरीश चंद्र गुप्ता, सुमित गुप्ता

कार्यालय सूफिया चौक लुधियाना पंजाब

संपर्क -8264173026, 97922 62533

राजनीति चौबीसी: इंडिया महाभारत

-मोहन द्विवेदी

अजीब मंजर है, जो आज तक आजाद भारत में शायद ही दिखा है। बात नाम पर आ जाए तो समझिए क्या बचा। कई बार तो लगता है कि होली की हुड़दंग मची हुई है। 28 पार्टियों के गठबंधन ने आइएनडीआइए (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव एलायंस) या 'इंडिया' नाम रख लिया तो जी20 का आमंत्रण 'राष्ट्रपति ऑफ भारत' की ओर से आया। संभव है, वजह यही न हो, लेकिन 'इंडिया' पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हमलावर रवैये और सोशल मीडिया में इंडिया को गुलामी का प्रतीक बताने की मुहिम ऐसा ही आभास देती लगती है। अलबत्ता, ऐसा सरकारी पत्र जारी होने के पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि भारत नाम का ही प्रयोग होना चाहिए। विपक्ष कयास लगा रहा है कि यह संविधान बदलने की पूर्व-पीठिका तैयार की जा रही है। तृणमूल कांग्रेस की ममता बनर्जी, आम आदमी पार्टी के अरविंद केजरीवाल जैसे कई नेताओं ने प्रतिक्रिया में कहा कि विपक्षी गठबंधन अपना नाम भारत रख ले तो वे क्या करेंगे। यहां यह याद कर लेना मुनासिब होगा कि 1967, 1977, 1989 में विपक्षी पार्टियों का बड़ा गठजोड़ तीखी लड़ाई में सत्तापक्ष को चुनौती दे चुका है, लेकिन कभी राजनीति का स्तर देश के नाम पर नहीं आया था।

नाम प्रकरण से इतना तो साबित होता ही है कि अगला लोकसभा चुनाव सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के लिए करो या मरो जैसी स्थिति है। हालांकि 2014 और 2019 के संसदीय चुनावों से फर्क यह है कि उनमें प्रधानमंत्री मोदी और भाजपा एजेंडा तय करती रही है और विपक्ष प्रतिक्रिया करता दिखता था। इस बार ठीक उलटा हो रहा है। यह पटना में कांग्रेस, जदयू, राजद, तृणमूल कांग्रेस, शिवसेना (उद्धव ठाकरे), राकांपा, समाजवादी पार्टी सहित 15 पार्टियों की पहली बैठक के बाद ही दिखने लगा था। बेंगलूरू में दूसरी बैठक के दौरान तो यह खुलकर दिखने लगा। बेंगलूरू में 26 पार्टियां जुट गईं और नाम 'इंडिया' रख लिया गया तो उसी दिन 2014 के बाद शायद पहली दफा एनडीए की बैठक बुला ली गई, जिसमें 38 पार्टियां जुट गईं। एनडीए के इस गठजोड़ में भाजपा ही इकलौती बड़ी पार्टी है जबकि इंडिया में कई राज्यों में खासा असर रखने वाली बड़ी पार्टियां हैं। उसी के बाद भाजपा की ओर से इंडिया नाम को लेकर अजीब-अजीब प्रतिक्रियाओं का सिलसिला शुरू हो गया।

Your paragraph text

उइंडिया की मुंबई में तीसरी बैठक के बाद घटनाक्रम बहुत तेजी से बदला। 31 अगस्त को बैठक के दिन ही संसद का 18-22 सितंबर तक पांच दिनों का विशेष सत्र बुला लिया गया, जिसकी सूचना पहली बार माइक्रोब्लॉगिंग साइट एक्स पर मिली। कायदा यह है कि कैबिनेट के प्रस्ताव के नोटिफिकेशन राष्ट्रपति जारी करते हैं। इसी के साथ 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' की खबर भी तैरने लगी। उधर, इंडिया गठबंधन ने चुनाव की तैयारी में जुटने और सीट बंटवारे की प्रक्रिया तेज करने का सिलसिला शुरू किया। बैठक में समन्वय समिति के अलावा चुनाव रणनीति, कार्यक्रम, सोशल मीडिया रणनीति, मीडिया रणनीति की चार कमेटियां बना लीं। समन्वय समिति में कई बड़े नेता तो कई दूसरी पांत के नेता हैं। यह भी तय हुआ कि 2 अक्टूबर से साझा रैलियां की जाएंगी, जिनमें भाजपा सरकार की नाकामियों वगैरह का जिक्र किया जाएगा।

सरकार ने ऐसी तेजी दिखाई, मानो चौंकाने की कोई बाजी चल रही है। एक देश, एक चुनाव पर विचार के लिए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अगुआई में आठ सदस्यीय कमेटी का गठन कर दिया गया। यह भी अचरज भरा है कि पहली बार कोई पूर्व राष्ट्रपति सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपेगा। कमेटी में विपक्ष के एकमात्र नुमाइंदे लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीररंजन चौधरी को भी रखा गया था, लेकिन चौधरी ने उसे ठुकरा दिया। उनकी दलील थी, "कमेटी के निष्कर्ष पहले ही तय कर लिए गए हैं तो किस बात की समीक्षा की जाएगी। इसके अलावा राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे को न शामिल कर उनका अपमान किया गया।"

लेकिन क्या यह इतनी जल्दी संभव है कि अगले चुनाव एक साथ कराए जाएं? पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एस.वाइ. कुरैशी आउटलुक से कहते हैं, “कम से कम पांच संविधान संशोधन करने पड़ेंगे और आधे विधानसभाओं से अनुमोदन कराना पड़ेगा। फिर चुनाव आयोग को त्रिस्तरीय- लोकसभा, विधानसभा और पंचायत चुनाव कराने के लिए तीन गुना ईवीएम की दरकार होगी, जिसमें कई साल लगेंगे।” (देखें इंटरव्यू)। यही नहीं, सवाल यह भी कि इसके पहले दो विधि आयोग (1999 और 2015) विस्तृत रिपोर्ट सौंप चुके हैं, तो कमेटी भला करेगी क्या?

विशेष सत्र क्यों बुलाया गया है, इसकी जानकारी नहीं है। कार्यसूची के मुताबिक पांचों दिन सरकारी कामकाज का जिक्र है। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे कहते हैं, “ऐसा कहीं होता है क्या?” शायद इसी वजह से कांग्रेस संसदीय दल की चेयरमैन सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखकर नौ एजेंडों पर चर्चा की मांग की है, जिनमें महंगाई, बेरोजगारी के अलावा अदाणी समूह के कथित भ्रष्टाचार भी है।

महिला आरक्षण विधेयक की चर्चा भी हवा में है, जिसके मुताबिक तिहाई सीट महिलाओं के लिए आरक्षित कर दी जाएगी यानी कुल 543 सीटों के अलावा 133 सीटें महिलाओं के लिए निकाली जाएंगी। कयास यह भी है कि सरकार अनुदान मांगें पारित करवा कर लोकसभा भंग करने की पहल कर सकती है, ताकि पांच राज्यों के विधानसभा के साथ संसदीय चुनाव भी कराए जाएं।

इसी दौरान खोजी पत्रकारों के एक समूह द्वारा अदाणी से जुड़ी शेल कंपनियों के बारे में नए तथ्य फाइनांशियल टाइम्स और गार्जियन में छपे। इन हलचलों के अलावा इंडिया गठबंधन को सबसे मुश्किल शायद सीट बंटवारे में आ सकती है। इसकी एक विद्रोही आवाज पंजाब से उठ रही है (देखें बॉक्स)। जो भी हो चौकन्ना रहिए, अगले साल तक बहुत कुछ होने जा रहा है।

संपादकीय ✍️

बलात्कार से बिक्री तक

महाकाल ज्योतिर्लिंग, महादेव और मंदिरों के शहर उज्जैन में 12 वर्षीय नाबालिग कन्या के साथ न केवल क्रूर बलात्कार किया गया, बल्कि उसे घायल कर लावारिस छोड़ दिया गया। उस बच्ची की रक्षा करने न तो कोई दैवीय करिश्मा हुआ और न ही किसी नागरिक ने उसकी पीड़ा साझा कर मदद करने की कोशिश की। उसे अस्पताल तक पहुंचाने की इनसानियत भी नदारद रही। बच्ची रोती-बिलखती, दर-दर गुहार करती रही, लेकिन उस कथित पवित्र शहर का असली चेहरा लगातार बेनकाब होता रहा। इतनी बेरुखी, संवेदनहीनता, तटस्थता सामने आती रही कि एक जिंदगी मर रही है, लेकिन घरों के दरवाजे बंद हैं! यही घोर कलियुग है। यह हमारे समाज और देश में हररोज घट रहा है। हररोज बलात्कार और सामूहिक दुष्कर्म, हत्या अथवा जला देने के जो औसत, दर्ज आंकड़े सामने आते रहे हैं, वे बेहद कम हैं। यह दरिंदगी, हवस और पाशविकता हम राजधानी दिल्ली में भी देखते रहे हैं। अभी हाल ही में 'आज तक' ने छिपे कैमरे से एक ऑपरेशन किया। मन-मस्तिष्क चीत्कार कर उठा। बेटियां अपने घर में भी सुरक्षित नहीं हैं। मामा, चाचा, मौसी आदि परिजन ही घर की बेटियां बेच रहे हैं। लाखों रुपए में बेटियों-बहनों की सौदेबाजी की जा रही है। हलफनामे भरे जा रहे हैं। ग्राहकों को तसल्ली दी जा रही है कि आप लड़कियों के साथ कुछ भी कर सकते हो! भारत के भीतर का एक और भारत यह भी है। एक रपट ने खुलासा किया है कि करीब 13 लाख बेटियां, बहनें, माताएं और देश की महिलाएं गायब हैं, लापता हैं।

वे स्त्रियां कहां गईं? कैसे लापता हुईं? पुलिस-व्यवस्था ने क्या किया? उन्हें कौन 'दरिंदे' लूट गए? क्या वे भारत की नारियां 'वेश्यालय' तक पहुंचा दी गई हैं अथवा विदेशों में तस्करी की गई हैं? बेहद झकझोर देने वाले सवाल हैं। किसी देश की 13 लाख कन्याएं और महिलाएं लापता हो जाएं और यह मुद्दा संसद में न उठे, इससे बड़ी हैरानी और संवेदनहीनता क्या होगी? संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के 33 फीसदी आरक्षण अब एक कानून बन चुका है। राष्ट्रपति हस्ताक्षर कर चुकी हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने इसे चुनावी मुद्दा बना दिया है और महिलाओं का व्यापक समर्थन हासिल करने को व्यग्र हैं। रोड शो के दौरान प्रधानमंत्री के वाहन के चारों ओर महिलाओं का घेरा बनाया जाने लगा है। स्पष्ट अर्थ है कि प्रधानमंत्री और उनकी पार्टी भाजपा को महिलाओं का समर्थन और सहयोग सुनिश्चित किया जा चुका है, लेकिन प्रधानमंत्री से हमने आज तक इस सरोकार के शब्द तक नहीं सुने कि 13 लाख स्त्रियां क्यों, कहां गायब कर दी गईं? वे सभी देश की सम्मानित नागरिक हैं, आधी-शक्ति की प्रतीक हैं और कई लाख तो मतदाता भी होंगी! वह देश के प्रधानमंत्री हैं, सभी संसाधन, स्रोत और शक्तियां उन्हें संविधान ने प्रदान की हैं। जिस देवनगरी में नाबालिग की इज्जत तार-तार की गई थी, वह मध्यप्रदेश का ही एक शहर है, जहां भाजपा की सरकार है।

प्रधानमंत्री उस राज्य में वोट मांग रहे हैं, सत्ता को बरकरार रखने के प्रयास और प्रयोग किए जा रहे हैं, लेकिन प्रधानमंत्री ने राज्य के मुख्यमंत्री और गृहमंत्री को तलब कर पूछा क्यों नहीं कि महादेव के शहर में ऐसा क्यों हुआ? आज मद्रास उच्च न्यायालय का फैसला आया है, जिसमें तमिलनाडु के 215 अफसरों, कर्मचारियों को पुन: दंडित किया गया है। 1992 में वाचथी गांव में 18 महिलाओं के साथ दरिंदगी की हदें पार की गईं। 32 साल बाद फैसला आया है। इस बीच 54 आरोपितों की मौत भी हो चुकी है। तब 8 माह की गर्भवती औरत और 13 साल की बच्ची को भी दुष्कर्म का शिकार बनाया गया। यह देश का कैसा न्याय है? दुष्कर्म, क्रूरता, हवस के मामलों में भी 32 साल तक मामला अदालतों में लटका रहेगा, तो फिर किसकी जिंदगी सुरक्षित मानी जा सकती है? राक्षस तो किसी की भी जिंदगी में टकरा सकते हैं। किसी की भी इज्जत से खिलवाड़ कर सकते हैं? फिर महिला सशक्तिकरण, आर्थिक विकास, आत्मनिर्भरता, शिक्षा आदि के जुमले क्यों उछाले जाते रहे हैं? यदि बच्चियां बचेंगी, तो फिर आगे बढ़ पाएंगी, पढ़-लिख सकेंगी! उनकी इज्जत पर ही हमले जारी रहेंगे, तो फिर हमारा देश 'भारत महान' कैसा? इस तरह की घटनाओं पर तुरंत रोक लगनी चाहिए और सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।

-अनिल अनूप

मनरेगा को 'इच्छा-मृत्यु' दे रही सरकार

-दुर्गा प्रसाद शुक्ला

कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) से संबंधित सोशल ऑडिट समय पर नहीं कराने का आरोप लगाया और दावा किया कि सरकार सुनियोजित ढंग से इस योजना को 'इच्छामृत्यु' दे रही है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने इस खबर का हवाला भी दिया, जिसमें कहा गया है कि कई राज्यों में मनरेगा से संबंधित सोशल ऑडिट इकाइयां निष्क्रीय हो गई हैं।

उन्होंने 'एक्स' पर पोस्ट किया, "ग्राम सभा द्वारा किया जाने वाला सोशल ऑडिट महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह जवाबदेही सुनिश्चित करने और पारदर्शिता को बढ़ाने के लिए है। मूल रूप से इसका उद्देश्य भ्रष्टाचार पर रोक लगाना है।"

रमेश ने कहा, "प्रत्येक राज्य में एक स्वतंत्र सोशल ऑडिट होता है, जिसे केंद्र द्वारा सीधे धन दिया जाता है, ताकि उसकी स्वायत्तता बरकरार रखी जा सके। अब इसकी फंडिंग में अत्यधिक देरी की बात सामने आ रही है। इसका नतीजा यह है कि सोशल ऑडिट समय पर नहीं हो पा रहा है।"

उन्होंने आरोप लगाया कि ऑडिट की इस पूरी प्रक्रिया से समझौता किया जाता है और फिर मोदी सरकार इस स्थिति का इस्तेमाल राज्यों को फंड देने से इनकार करने के लिए एक बहाने के रूप में करती है। कांग्रेस महासचिव ने कहा कि पैसा नहीं मिलने के कारण मजदूरी का भुगतान आदि प्रभावित होता है। उन्होंने दावा किया, 'यह और कुछ नहीं, बल्कि मनरेगा को सुनियोजित ढंग से चक्रव्यूह में फंसाकर इच्छामृत्यु देने जैसा है।"

'सपने' ने लिख दी थी लता के शोहरत की कहानी

-सर्वेश द्विवेदी

28 सितंबर 1929 के दिन मध्यप्रदेश के इंदौर में जन्मी लता मंगेशकर भले ही इस दुनिया को अलविदा कह चुकी हैं, लेकिन उनकी आवाज का जादू इस जहां में सदियों तक बरकरार रहेगा. लता दी को संगीत विरासत में मिला, क्योंकि उनके पिता दीनानाथ मंगेशकर मराठी थिएटर एक्टर, म्यूजिशियन और वोकलिस्ट थे. जन्म के वक्त लता का नाम हेमा रखा गया था, लेकिन जब वह पांच साल की हुईं, उस वक्त उनका नाम लता कर दिया गया. बर्थडे स्पेशल में हम आपको लता मंगेशकर से जुड़ा ऐसा किस्सा बताने जा रहे हैं, जो आपने शायद ही कभी सुना होगा.

लता दी और संगीत का साथ बचपन से ही रहा. जब वह 20-22 साल की हुईं, उस वक्त वह एक दिन में छह से आठ गाने रिकॉर्ड करती थीं. वह सुबह दो गाने तो दोपहर में दो गाने और रात में दो-तीन गाने रिकॉर्ड करती थीं. पूरे दिन मेहनत करके जब लता दी सो जाती थीं, तब वह रोजाना एक जैसा सपना देखती थीं. जानकार बताते हैं कि उन्होंने इस सपने का जिक्र अपनी मां से किया था.

लता मंगेशकर ने एक इंटरव्यू में बताया था कि वह रोजाना सपने में सुबह के वक्त समुद्र के पास एक देवी के मंदिर को देखती थीं. वह जब मंदिर का दरवाजा खोलती थीं तो काले पत्थर की सीढ़ियां और रंग-बिरंगा पानी नजर आता था. जब वह मंदिर की सीढ़ियों पर बैठ जाती थीं, तब रंग-बिरंगा पानी उनके पैरों को छूने लगता था. लता मंगेशकर ने अपनी मां से इस सपने का मतलब पूछा था. उनकी मां ने सपने का मतलब बताते हुए कहा था कि लता, यह भगवान का आशीर्वाद है. देखना एक दिन तुम बहुत मशहूर हो जाओगी. मां की कही बात लता दी की जिंदगी में हकीकत साबित हुई.

बता दें कि लता मंगेशकर ने साल 1942 के दौरान अपना करियर शुरू किया था. उस वक्त वह महज 13 साल की थीं. उन्होंने अलग-अलग भाषाओं में करीब 30 हजार गाने गाए. वह भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया की सबसे मशहूर और सम्मानित पार्श्व गायकों में शुमार रहीं. बता दें कि लता मंगेशकर को देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया था. कोरोना महामारी के दौरान लता मंगेशकर भी संक्रमित हो गई थीं और 6 फरवरी 2022 के दिन इस दुनिया को अलविदा कह गईं.

25 हजार लाशों की चीरफाड़ करने वाली मंजू

-अंजनी कुमार त्रिपाठी

उस दिन को याद कर सिहर जाती हूं..। हाथ पैर कांपने लगते हैं..। पोस्टमॉर्टम हाउस में मेरा पहला दिन था। सामने टेबल पर एक 22 साल के लड़के की लाश पड़ी थी। कंपकंपाते हाथों से छेनी-हथौड़ी उठाई और उसका सिर खोल दिया। आंखों से आंसू थम ही नहीं रहे थे। काम पूरा तो कर दिया, लेकिन 24 घंटे तक खाना नहीं खा पाई।

ये कहानी बिहार की महिला पोस्टमॉर्टम अस्सिटेंट मंजू की है। अब तक लगभग 25 हजार से अधिक शवों का पोस्टमॉर्टम कर चुकीं मंजू ड्यूटी के प्रति इतनी वफादार हैं कि घर में पति की लाश छोड़कर पोस्टमॉर्टम के लिए हॉस्पिटल पहुंच गई थीं।

1975 में मंजू का जन्म दरभंगा के किसान परिवार में हुआ। साल 1990 में मंजू की शादी समस्तीपुर के रमेश मलिक के साथ हुई थी। किसान परिवार से आई मंजू के ससुराल में पोस्टमॉर्टम सहायक का ही काम होता था।

ससुराल वाले अंग्रेजों के समय से ही यह काम कर रहे थे। उनके साथ मंजू ने भी अपने हाथों में कैंची थाम ली। साल 2000 से पोस्टमॉर्टम करना शुरू कर दिया। मंजू बताती हैं कि ये मेरे पूर्वजों का काम है।

सबसे पहले मेरे ससुर की दादी थी फूलझारू देवी, वह यह काम करती थीं। उसके बाद मेरे पति के दादा बंगाली मलिक करते थे। फिर मेरे खुद के ससुर रामजी मलिक यह काम करने लगे। फिर मेरे पति रमेश मलिक ने यह काम शुरू किया और अब मैं यह काम कर रही हूं।

अब अपने काम को लेकर मंजू देवी इतना सजग रहती हैं कि अगर उनके परिवार के भी किसी सदस्य का पोस्टमॉर्टम करना पड़ता है तो वो पीछे नहीं हटतीं। उसे भी अपना कर्तव्य समझकर पूरा करती हैं।

उन्होंने बताया कि एक बार उन्हें अपनी ही जयधी (भाई की बेटी) का पोस्टमॉर्टम करना पड़ा। वो बर्न केस था। उसका पूरा शरीर जल गया था। तो उसका पोस्टमॉर्टम किया। उस वक्त भी मैंने बस यही सोचा कि ये मेरा काम है तो काम को तो करना ही होगा। यही सोचकर उसका पोस्टमॉर्टम कर दिया।

काम की वजह से आए दिन इन्हें अस्पताल से लेकर घर तक तरह-तरह के ताने सुनने पड़ते हैं। साथ ही लोग इन्हें घृणा की दृष्टि से भी देखते हैं, लेकिन कोई भी ताना हौसले को नहीं तोड़ पाया।

इस पर मंजू देवी कहती हैं कि समाज वालों का तो काम है कहना, लेकिन मैंने कभी उनकी बातों का ध्यान नहीं दिया। अस्पताल में लोग अक्सर कहते हैं कि हमसे अलग रहिए, क्योंकि आप डेड बॉडी का काम करके आई हैं। हालांकि मैं इन सब बातों का ध्यान नहीं देती। मैं बस अपने काम से मतलब रखती हूं।

मंजू देवी ने अपने काम को हमेशा प्राथमिकता दी है। 24 दिसंबर 2001 को जब उनके पति का देहांत हुआ उस वक्त उनका शव घर में पड़ा हुआ था। तभी अचानक सदर अस्पताल में मुसरीघरारी से एक मृत शरीर पहुंचा। अस्पताल से इन्हें बुलाया गया। उस वक्त मंजू देवी अपने पति के शव को छोड़कर पोस्टमॉर्टम करने अस्पताल पहुंच गईं। पोस्टमॉर्टम पूरा होने के बाद वह अंतिम संस्कार का सामान लेकर घर पहुंचीं। घर पहुंचने के बाद क्रिया कलाप पूरा कर अपने पति के शव को अंतिम विदाई देकर दाह संस्कार के लिए भेजी।

घर की बात थी। मान लीजिए की घर में कोई नाराज हो जाएगा तो हम उसे मना लेंगे। लेकिन वो तो पब्लिक मोमेंट था। तो पहले पब्लिक को देखना जरूरी है। हम नहीं देखेंगे तो कौन देखेगा। यहां मैं सिर्फ अकेली पोस्टमॉर्टम सहायिका हूं, यहीं सोचकर मैं अपने पति के शव को छोड़कर पोस्टमॉर्टम करने अस्पताल गई। लोगों ने कई तरह के ताने दिए, लेकिन मैंने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। उस वक्त जो मुझे ठीक लगा मैंने वही किया।

मंजू देवी के परिवार में उनके दो बेटे और तीन बेटियां हैं। जिसमें उन्होंने एक बेटे और बेटी की शादी कर दी है। बड़ी बेटी की शादी कोलकाता के अच्छे परिवार में की। वहीं बड़ा बेटा संगीत का शौकीन है। साथ ही वह स्कूल में संगीत का शिक्षक भी है। छोटा बेटा और दोनों छोटी बेटी अभी पढ़ाई कर रही हैं।

मंजू देवी जहां पोस्टमॉर्टम करती हैं, उस कमरे में लाइट, डेडबॉडी फ्रीजर, एसी और पानी कुछ भी नहीं है। जबकि पोस्टमॉर्टम कमरे में ये सारी सुविधा होनी चाहिए। इसके बावजूद ये अपने परिवार को चलाने और अपने बच्चों को अच्छी सुख-सुविधा देने के लिए वहां काम करती हैं। वो बताती हैं की अगर रात के 12 बजे भी डेड बॉडी आती है तो मुझे आना पड़ता है। रात हो या दिन, चाहे आंधी आए या तूफान, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता मुझे पोस्टमॉर्टम करने आना ही पड़ता है।

एक डेडबॉडी का पोस्टमॉर्टम करे या सैकड़ों मंजू देवी को एक दिन के 380 रुपए ही मिलते हैं। अगर किसी दिन एक भी डेडबॉडी नहीं आई तो उस दिन की हाजिरी नहीं लगती और उन्हें एक रुपया भी नहीं मिलता। सभी पैसे साल में एक बार ही मिलते हैं।

इनका कहना हैं कि इस काम के अलावा मेरे पास कोई और ऑप्शन नहीं है, क्योंकि मैं शुरू से ही यही काम करते आई हूं। ऐसे तो मुझे इस काम को करने में कोई परेशानी नहीं होती है। लेकिन मेरा सरकार से बस इतना कहना है की उनको जो ठीक लग रहा है वो मुझे दे, लेकिन साथ में मेरी नौकरी स्थाई कर दे। ताकि मेरे परिवार को मैं अच्छे से रख सकूं।

इनका कहना हैं कि इस काम के अलावा मेरे पास कोई और ऑप्शन नहीं है, क्योंकि मैं शुरू से ही यही काम करते आई हूं। ऐसे तो मुझे इस काम को करने में कोई परेशानी नहीं होती है। लेकिन मेरा सरकार से बस इतना कहना है की उनको जो ठीक लग रहा है वो मुझे दे, लेकिन साथ में मेरी नौकरी स्थाई कर दे। ताकि मेरे परिवार को मैं अच्छे से रख सकूं।

आगे वह बताती हैं कि हम ऐसा कभी नहीं चाहते कि मेरा बेटा या बेटी ये काम करे। पहली बात तो इस काम को करने के लिए बहुत हिम्मत की जरूरत है क्योंकि यह काम बहुत मुश्किल होता है।

यह सबके बस की बात नहीं है। हार्ट अलाऊ करेगा तब ही यह काम कोई कर पाएगा। क्योंकि ज्यादातर जो मृत शरीर होता हैं वो कई जगहों पर कटा रहता है या गोली लगा रहता, उसे छूना होता है और फिर जोड़ना भी पड़ता है। इसलिए इसको करने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए।

मंजू बताती हैं कि साल 2020 में कोरोना काल में मुझे हटा दिया गया। फिर जब कोरोना में डेड बॉडी आई तो उस वक्त जिसे काम पर रखा गया था, उसने डेड बॉडी को छूने से इनकार कर दिया। फिर डीएस और एडीएम सर ने मुझे बुलाया कि थोड़ा सा डेड बॉडी को उठाने में मेरी मदद कर दीजिए। कल आपको चिट्ठी मिल जाएगी।

फिर हमने कहा कि नहीं मुझे पहले चिट्ठी दीजिए फिर मैं इसे उठाऊंगी, क्योंकि हमको तो आपने हटा दिया है तो फिर हम काम कैसे कर सकते हैं। फिर उन लोगों ने मुझे सांत्वना दी कि कल चिट्ठी मिल जाएगी। जब मैं सुबह चिट्ठी लाने गई तो मुझे वहां से भगा दिया गया। फिर मैं संघर्ष करके वापस इस काम पर लौटी हूं।

मंजू देवी ने पोस्टमॉर्टम की सारी प्रोसेस को बताई। उन्होंने बताया कि थाने से डेड बॉडी आती है और उसके साथ एक चौकीदार पोस्ट लेकर आता है। फिर इमरजेंसी में रजिस्टर मेंटेन होता है। फिर शव को पोस्टमॉर्टम रूम में रखा जाता है। तब डॉक्टर साहब आते हैं और मृत शरीर का पूरा कपड़ा उतार कर इंज्युरी देखते हैं। फिर मैं वहां पर कट लगाती हूं। डॉक्टर साहब जो पूछते हैं, उनको बताती हूं और वो लिखते जाते हैं।

मंजू देवी ने पोस्टमॉर्टम की सारी प्रोसेस को बताई। उन्होंने बताया कि थाने से डेड बॉडी आती है और उसके साथ एक चौकीदार पोस्ट लेकर आता है। फिर इमरजेंसी में रजिस्टर मेंटेन होता है। फिर शव को पोस्टमॉर्टम रूम में रखा जाता है। तब डॉक्टर साहब आते हैं और मृत शरीर का पूरा कपड़ा उतार कर इंज्युरी देखते हैं। फिर मैं वहां पर कट लगाती हूं। डॉक्टर साहब जो पूछते हैं, उनको बताती हूं और वो लिखते जाते हैं।

फिर बॉडी को सील कर प्लास्टिक से पैक कर दी जाती है। पहली बार में मुझे थोड़ी सी माया लगी। उसके बाद एक-दो का किया तो हिम्मत आ गई और उस दिन से आज तक कर रही हूं।

आम तौर पर जो पोस्टमॉर्टम करते हैं वो शराब का सेवन करते हैं, लेकिन मंजू देवी ने कभी शराब को हाथ नहीं लगाया। उन्होंने बताया की हम शराब नहीं पीते हैं। हम बस पान खाकर काम कर लेते हैं। मेरा मन और दिल दोनों ही बहुत मजबूत है, जो मानसिक तौर पर मजबूत नहीं होगा वो थोड़ा बहुत तो लेता ही होगा, लेकिन हम नहीं लेते।

मुझे इस काम को करते कभी तनाव नहीं हुआ। मेरे लिए जैसे अन्य काम है वैसे ही ये भी है। कोई भी काम एंजॉय करके करना चाहिए। कभी भी हौसला छोटा नहीं रखना चाहिए, बल्कि बुलंद होना चाहिए। काम कोई खराब नहीं होता हैं, सब अच्छा होता है।

डेड बॉडी के बारे में बात करते हुए मंजू ने बताया कि एक बार पोस्टमॉर्टम के दौरान डेड बॉडी का पैर अचानक अपने आप सीधा होने लगा। लेकिन हम डरे नहीं अच्छे से सारा काम करके भेज दिए।

वहीं एक बार मृत शरीर ने अपनी आंख खोल दी थी। तब मैंने उसे बंद किया। फिर से उसने दोबारा आंखें खोली तो मैंने उसकी आंख को बंद करते हुए कहा कि आंख बंद करो, तुम डेड बॉडी हो। उसके बाद आंखें बंद रह गई। फिर मैंने पोस्टमॉर्टम करके डेड बॉडी को प्लास्टिक में बंद करके हाथ जोड़कर उसे विदा कर दिया।

जब हमने उनसे पूछा लोग आत्माओं की बात करते हैं, आपने इतने सारे पोस्टमॉर्टम किए हैं तो क्या आपको कभी कोई आत्मा दिखी इस पर उन्होंने बताया कि आत्मा तो मुझे आज तक नहीं दिखी, क्योंकि हम मृत शरीर के सेवक हैं। इसलिए आज तक मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ है।

हर पोस्टमॉर्टम के बाद मृत शरीर को प्रणाम करती हूं, ताकि उसका स्वर्गवास हो। ये मेरा कर्तव्य है। इसलिए मैं किसी भी मृत शरीर को इज्जत से विदा करती हूं।

मंजू देवी के बड़े बेटे दीपक ने बताया कि जब हम लोग बहुत छोटे थे तब पिताजी का देहांत हो गया था। तब से लेकर आज तक मेरी मां सिर्फ अपने बच्चों को सुविधा देने के लिए इतना कष्ट करके शवों का पोस्टमॉर्टम करती हैं। बिना किसी भी बात की परवाह किए हुए। सिर्फ हमें अच्छी परवरिश देने के लिए मां ने अपना सारा सुख चैन सब कुछ त्याग दिया।

मंजू देवी के बड़े बेटे दीपक ने बताया कि जब हम लोग बहुत छोटे थे तब पिताजी का देहांत हो गया था। तब से लेकर आज तक मेरी मां सिर्फ अपने बच्चों को सुविधा देने के लिए इतना कष्ट करके शवों का पोस्टमॉर्टम करती हैं। बिना किसी भी बात की परवाह किए हुए। सिर्फ हमें अच्छी परवरिश देने के लिए मां ने अपना सारा सुख चैन सब कुछ त्याग दिया।

पिता के जाने के बाद जो मां ने हमारे लिए किया हैं वो शायद ही कोई मां कर पाती। मुझे अपने मां पर बहुत गर्व हैं। आज हम जो कुछ भी हैं अपनी मां की वजह से ही हैं। मेरी मां के काम की वजह से मेरे कई दोस्त मुझे हमेशा ताना देते है कि इसकी मां पोस्टमॉर्टम का काम करती है। साथ ही हमें घृणा की दृष्टि से देखते हैं, लेकिन हम इनकी बातों पर कभी ध्यान नहीं देते। क्योंकि मेरी मां जो करती हैं वो हमारे लिए करती है।

जब भास्कर ने मंजू देवी के बेटे दीपक से सवाल किया की आपके पूर्वज ये करते आए हैं तो क्या आप भी भविष्य में ये काम करेंगे? इस पर दीपक ने कहा कि मैं यह काम कभी नहीं करना चाहूंगा, क्योंकि मैं अपनी मां का कष्ट देखता हूं। वो दिन रात एक करके काम करती हैं, लेकिन उन्हें वापसी में उस तरीके की कुछ भी सुविधा नहीं मिलती। उन्हें ढंग से सैलरी भी नहीं मिलती। उन्हें 24 घंटे की दिहाड़ी मिलती है। जबकि दिहाड़ी तो 8 घंटे की ही होती है। साथ ही मेरी मां ने हम सब को मेहनत से उस लायक बनाया है कि भविष्य में मुझे वो काम ना करना पड़े जो मेरी मां करती है।

कमजोर पल

-भावना प्रसाद

पति अर्नव की बेवफाई के सबूत शिवि के सामने थे। अब वो इसे सिर्फ संदेह कहकर अपने दिल को समझा नहीं सकती। उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया। दर्द ऐसा पिघला कि आंखों की व्यथा सुनने को तैयार ही नहीं था कि वे रो-रोकर थक गई हैं। पर उसे समझना पड़ा कि बच्चे स्कूल से आने वाले हैं, इसलिए उसे कैसे भी करके खुद को समेटना होगा। जो व्यथा उसने झेली थी, उसकी आंच भी वो बच्चों तक नहीं पहुंचने देना चाहती थी।

खाना समेटकर बच्चों को सुलाकर बेडरूम में पहुंचते ही उसने अपने मोबाइल पर वो वीडियो चलाकर अर्नव के सामने रख दिया। वीडियो देखने के बाद अर्नव ने शिवि की आंखों के अंगारे देखे और पलकें झुका लीं। फिर दोनों हाथों से अपना चेहरा ढंककर थका और बेहाल सा बेड पर बैठ गया।

“यों नजरें फेरने से काम नहीं चलेगा। अब भी तुम यही कहोगे कि ये सिर्फ मेरा शक है?” शिवि अपनी आवाज का वॉल्यूम भरसक धीमे रखने की कोशिश करते हुए, लेकिन गुर्राकर बोली।

“मैं सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि यकीन मानो हमारा रिश्ता इससे आगे नहीं बढ़ा है। और जो कुछ इस वीडियो में दिख रहा है, वो केवल एक कमजोर पल था। हम चाहते नहीं थे इस तरह...”

“क्या नहीं चाहते थे और किससे आगे नहीं बढ़ा तुम्हारा रिश्ता?” शिवि में पूरी बात सुनने का सब्र नहीं था।

“मेरी पूरी बात तो सुनो...” अर्नव का स्वर दयनीय हो गया।

“तुम उम्मीद कैसे कर सकते हो कि इस तरह का वीडियो देखने के बाद भी...” शिवि की पलकें फिर बरस चलीं और आवाज पनीली होकर उसका साथ छोड़ गई।

अर्नव ने उसे बांहों में भरना चाहा तो वो छिटक गई। पर उसकी आवाज रुंध जाने के कारण अर्नव को बात कहने का मौका मिल गया, “यकीन करो शिवि, हमारे बीच सिर्फ इमोशनल इंवॉल्वमेंट..”

“मतलब तुम सिर्फ प्यार करने लगे हो, यही न? तुम कैसे ये बात इतने नॉर्मल ढंग से कह पाए कि सिर्फ! और कमजोर पल? आज एक कमजोर पल में तुम उसे यों बाहों में भरकर उसकी पीठ सहला सकते हो, उसके गाल हाथों में लेकर उसके आंसू पोछ सकते हो, उसके माथे पर चुंबन दे सकते हो। वो तुम्हारे सीने पर सिर रखकर रो सकती है और वो भी दस मिनट! तो क्या गारंटी है कि कल को ये कमजोर लम्हे इसके आगे नहीं बढ़ेंगे?”

शिवि के इस वाक्य से अर्नव के चेहरे के भाव बदल गए। “हमने पहले ही ये डिसाइड... मैं..वादा करता हूं कि...”

“नहीं अर्नव! मुझ तक वीडियो पहुंचने के बाद तुमने माना कि इंटीमेसी है। मैं इस फीलिंग ऑफ इनसिक्योरिटी के साथ नहीं जी सकती कि कल को जब इससे आगे के रिश्ते के सबूत मेरे हाथ आएंगे तो तुम मानोगे कि...”

दोनों बेड के दो किनारों पर लेटे सोने की असफल कोशिश कर रहे थे। शिवि का दिमाग चकरा रहा था। उसने कह तो दिया कि वो फीलिंग ऑफ इनसिक्योरिटी में नहीं जीना चाहती, पर वो करेगी क्या? तलाक? शादी के इतने सालो में अर्नव से पाया प्यार, उसकी देखभाल, वो खूबसूरत लम्हे जो उन्होंने साथ जिए, क्या वो सच में इन सबका अंत चाहती है? क्या वो अर्नव के प्यार को भूल सकती है? पर क्या ये सब जानने के बाद उनमें सब कुछ पहले जैसा हो पाएगा?

फिर अचानक उसके जेहन में उसका बचपन फिल्म की तरह चलने लगा। उसके प्यारे पापा! वो पापा की उंगली हाथ में आने पर दुनिया में कहीं भी जा सकने का भरोसा। वो पापा के अपनी साइकिल के पीछे दौड़ने पर साइकिल से गिरकर चोट लगने की सारी संभावनाएं खत्म हो जाने का भरोसा। और अचानक ये पता चलने पर कि पापा से मम्मी तलाक ले रही हैं, क्योंकि पापा को किसी और से प्यार..! और भरोसे के उस शीशमहल का टूट जाना। भरोसा टूटने से उसके वजूद का टूट जाना। नहीं! जो टूटन उसने झेली है, वो अपने बच्चों को नहीं दे सकती।

सारी रात बचपन उसकी आंखों में फिल्म की तरह चलता रहा। हर कुछ देर पर आज की लड़ाई के पल उस फिल्म में ओवरलैप करते दृश्यों की तरह गुंथ जाते। मम्मी का पापा से झगड़ना, पापा का बच्चों की दुहाई देना, मम्मी के आंसू, पापा का उन्हें संभालने की कोशिश, मम्मी का उन्हें झिटकते रहना...

फिर एक दिन पापा का उसे गले लगाकर बेतरह रोना... "मैं मिलने आता रहूंगा। अदालत ने एक महीने में एक बार तुम्हें पूरे दिन के लिए अपने साथ रखने की परमीशन दी है।"

और उसका पापा पर गुस्सा फूट पड़ना... वो ऐसे उसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं? उसका मम्मी की तरह पापा को झिटक देना। पापा का तड़पकर मम्मी से कहना, "मुहर लगने से पहले सात दिन का समय दिया है अदालत ने। अभी भी सोच लो। मैं वादा करता हूं कि..."

और मम्मी का उसका हाथ पकड़कर पापा से जबरदस्ती छुड़ाकर... आज अर्नव का चेहरा पापा के चेहरे के साथ आ गुंथा। 'मैं वादा करता हूं कि...' अगर मम्मी ने पापा को एक मौका दिया होता तो?

दूसरे दिन शिवि का शरीर मशीन की तरह ऑफिस की कैब में बैठ गया। हाथ मशीन की तरह मोबाइल हाथ में लिए काम की लिस्ट चेक कर करने लगे।

फिर उंगलियों ने खुद-ब-खुद तुहिना, उसकी सबसे प्रिय सहेली का नंबर डायल कर दिया। पर आज वो भी बहुत खोई-खोई सी लगी। शाम को दोनों का अपने फेवरे कैफे में मिलना तय हो गया।

शाम को उसका चेहरा और आवाज बिल्कुल बदल चुके थे। वो बहुत उत्साहित लग रही थी। शिवि को ज्यादा नहीं पूछना पड़ा। वो खुद ही खुलती गई।

"पता है शिवि, सुबह मैं बहुत मायूस क्यों थी। मुझे लग रहा था कि मुझे प्यार हो गया है। वो मेरा सबसे अच्छा दोस्त शलभ है न! उसी के लिए दिल में कुछ ऐसी भावनाएं पनपीं। फिर इत्तेफाक से हमें एकांत मिल गया और कुछ लम्हे... उसके बाद मेरे मन में मत पूछ कि कितना गिल्ट भर गया। आखिर हम दोनों शादीशुदा हैं... आई मीन कोई ऐसा-वैसा काम नहीं किया हमने... जैसा शायद तू सोचने लगी है।"

बोलते-बोलते शिवि के चेहरे पर कठोर भाव देखकर तुहिना ने ठिठककर बात की दिशा बदली।

"फिर दिनभर में ऐसा क्या हुआ कि तेरी सारी मायूसी, सारा गिल्ट हवा हो गया?" शिवि का सब्र जवाब दे रहा था।

"मेरी एक कजिन काउंसलर है। वो अक्सर कहती रहती थी कि हमारे देश में लोगों को अवेयरनेस नहीं है मन की छोटी-छोटी गुत्थियों के लिए काउंसलर के पास जाने की। तो मैंने सोचा उसके पास चलते हैं। सच कहती हूं, उसके पास जाकर बातों ही बातों में..."

ऐसी क्या बातें हो गईं कि एक पहर में तेरा गिल्ट ही भाग गया। मतलब तुझे ये सब सही लगने लगा?" शिवि को अब तुहिना और उसकी काउंसलर पर गुस्सा आने लगा।

अरे नहीं, पर सही और स्वाभाविक में फर्क है। देख शेरो-शायरी में कहा जाता रहा है न कि इश्क एक रोग है और ये किसी को भी हो सकता है। तो रोग का इलाज किया जाता है, उसके लिए गिल्ट नहीं पाला जाता।

अब देख, हमें अगर सेम जेंडर के दोस्त से, किसी बच्चे से, अपने रिश्तों से बहुत ज्यादा लगाव हो तो हम कितने फख्र से कहते हैं कि हमें उससे बहुत प्यार है। फिर अपोजिट जेंडर के साथ इस लगाव को क्यों..."

"क्योंकि उसमें रिश्ते के आगे बढ़ने की, फिजिकल होने की, अपने जीवनसाथी से विरक्त हो जाने की संभावनाएं होती हैं।" शिवि के गाल तपने लगे और आवाज चीखने जैसी हो गई।

पर तुहिना का ध्यान उसके लहजे पर नहीं था। वो अपनी धुन में बोले जा रही थी, "उन्हीं संभावनाओं से बचने का इलाज तो बताया उसने..." तुहिना बोलती गई और शिवि के चेहरे के भाव बदलते गए। उसमें एक नई आशा जागने लगी।

"मैं बच्चों की खातिर... नहीं, सच कहूं तो जो प्यार इतने सालों में तुमने मुझे दिया है उसकी खातिर भी तुम्हें एक मौका देना चाहती हूं।"

अर्नव का चेहरा खिल उठा, "मैं वादा करता हूं कि उससे कभी नहीं..."

"नहीं, मैं तुमसे कुछ और चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि तुम उसे उसके पति और बच्चों के साथ डिनर पर घर बुलाओ।"

अर्नव अचकचा गया। उसने अपनी आश्चर्य और संदेह भरी निगाहें शिवि पर टिका दीं।

शिवि को हंसी आ गयी।

"वो शेर सुना है न-

जुल्मे उल्फत की हमें लो सजा देते हैं।

कितने मासूम हैं शोलों को हवा देते हैं।"

अर्नव की हैरानी बढ़ती जा रही थी कि आखिर शिवि चाहती क्या है!

"मैं तुम्हारे दिल के शोलों को हवा नहीं देना चाहती। सदियों से कविताओं में गलत नहीं कहा गया कि प्यार एक रोग है जो किसी को भी हो सकता है। नई बात ये है कि मुझे विश्वास हुआ है कि सही वक्त पर पता चलने पर इसे ठीक किया जा सकता है। मैं इस रोग की रिकवरी में तुम्हारी मदद करना चाहती हूं। मैं उससे न मिलने का नहीं, सिर्फ परिवार की उपस्थिति में मिलने का वादा चाहती हूं।

मैं तुम्हारे दिल को वो माहौल देना चाहती हूं जिसमें उसे यकीन दिलाया जा सके कि जो 'इमोशनल इंवॉल्वमेंट' तुम्हारे और उसके बीच पनप गया है, वो स्त्री-पुरुष का 'प्रेम' नहीं है। और इसके लिए तुम्हें उसके प्रति सहज रहना और मेरे साथ अपने रिश्ते को मजबूत करने की कोशिश करना पड़ेगा। कर सकोगे?" शिवि ने अर्नव की आंखों में सीधे झांका तो उसने भावुक होकर शिवि को अपनी बांहों में भर लिया।

"आज तुम मेरी नजरों में बहुत ऊंची उठ गई हो। तुम जो कहोगी मैं करूंगा। यकीन मानो, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं और वो कभी कम नहीं होगा।"

बचपन में नौकरों ने किया यौन शोषण; अब लड़कियों को बचाती हूं

-सर्वेश द्विवेदी

नमस्ते इंडिया, मैं सोमी अली एक्ट्रेस हूं और मियामी में अपना एनजीओ भी चलाती हूं। मेरी परवरिश कराची के एक बहुत ही खूबसूरत और आलीशान घर में हुई। 28 कमरों वाली यह हवेली बाहर से देखने में जितनी खूबसूरत थी, उतने ही भयानक हादसे हवेली के अंदर घटे। घर में रोज-रोज लड़ाई-झगड़े, पापा रोज नशे की हालत में मां के साथ मारपीट करते। इस सब को देखने सुनने की आदत मुझे बचपन में ही पड़ गई। लेकिन उन हालात से निकलकर मैं इतनी मजबूत बन चुकी थी कि मैंने एक एनजीओ सिर्फ इसलिए बनाया ताकि मैं लोगों की बेखौफ मदद कर सकूं।

मेरे पापा ने अपने करियर की शुरुआत बतौर फिल्म डायरेक्टर की। उसके बाद उन्होंने पाकिस्तान की कई फिल्मों का निर्देशन किया। पापा का फिल्म स्टूडियो हमारे घर के बेसमेंट में ही था और हम तीसरी मंजिल पर रहा करते। मैं फिल्म के सेट, शूटिंग और न्यूकमर्स को देखते-देखते बड़ी हुई।

हीरोइनों के साथ रिश्तों की वजह से मम्मी-पापा के बीच झगड़े होते। मैं उनकी आपसी मारपीट की गवाह रही। मेरी मां को पापा के ये रिश्ते नागवार गुजरते। वो पापा से सवाल करतीं तो जवाब में उन्हें मारपीट और गालियों के सिवा कुछ नहीं मिलता।

पांच साल की उम्र में घर के कुक और नौ साल की उम्र में घर के गेट कीपर के हाथों में मैं सेक्शुअल एब्यूज का शिकार हुई। बचपन के इन हादसों के बाद मैं अंदर ही अंदर टूटती चली गई। मेरा मन पढ़ाई की तरफ से भटकने लगा। मैं मुश्किल से पढ़ाई पर फोकस कर पाती। हमेशा खिड़की से बाहर देखती रहती। मुझे यह भी नहीं पता था कि मैं एक गंभीर बीमारी पीटीएसडी यानी पोस्ट-ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर की शिकार हो चुकी हूं। ये बीमारी उन लोगों को होती है जो किसी दर्दनाक घटना से गुजरते हैं।

नेटबॉल, स्विमिंग और क्रिकेट खेलने की बेहद शौकीन होने के अलावा बदकिस्मती से मेरे पास अपने बचपन की खूबसूरत यादों की बहुत कमी है। लेकिन खेलों का सफर भी ज्यादा दिन नहीं चला। 9 साल की थी तो मेरे बाएं पैर में ट्यूमर हो गया, जिसका ऑपरेशन करना पड़ा। खेलों से मेरा प्यार यहीं खत्म हो गया।

मुझे मां के साथ सर्जरी के लिए अमेरिका भेज दिया गया। मेरे चाचा उस समय मियामी में रहते थे और इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे।

इंडिया से जुड़े अनुभव बहुत दुखदायी रहे। सलमान खान के क्रश में डूबी वहां मैं अपनी चाहत को पाने का सपना लेकर गई थी। 16 साल की उम्र में देखी गई फिल्म के एक किरदार से प्रभावित होकर दूसरे देश में जाने का फैसला मेरी मौत के समान था। यह अब भी मुझे परेशान करता है। पर्दे पर नजर आने वाला शरीफ सा किरदार रियल लाइफ में यह बिल्कुल अलग है।

जिंदगी में मुझे एक चीज का अफसोस ताउम्र रहेगा कि मैंने अपने भविष्य के बारे में कभी नहीं सोचा और बिना कुछ सोचे समझे कम उम्र में ऐसा फैसले लिए जो मुझे आज भी दर्द देते हैं। मैं किस मुल्क से हूं और कहां रहती हूं, ये बातें इतनी मैटर नहीं करतीं।

ये हूं मैं

जिंदगी में मुझे एक चीज का अफसोस ताउम्र रहेगा कि मैंने अपने भविष्य के बारे में कभी नहीं सोचा और बिना कुछ सोचे समझे कम उम्र में ऐसा फैसले लिए जो मुझे आज भी दर्द देते हैं। मैं किस मुल्क से हूं और कहां रहती हूं, ये बातें इतनी मैटर नहीं करतीं।

कोई भी इंसान न बहुत अच्छा हो सकता है और न ही बहुत बुरा। इंडिया में मैंने कई रंग देखे, चाहे वह जिस्मानी रिश्ता हो, पेशेवर रिश्ते हों या दोस्ती हो। लेकिन मेरी जिंदगी का सबसे बुरा तजुर्बा हर एक दौर में रिश्तों से ही मिला। जिसे मैं अब भी भुगत रही हूं, क्योंकि मुझे अभी भी धमकाया जा रहा है, भले ही मैंने 22 साल पहले ही रिश्ते से बाहर निकल चुकी हूं।

मेरी वजह से सलमान और संगीता की शादी टूटी

मैं सलमान की पहली गर्लफ्रेंड नहीं थी। शाहीन नाम की एक लड़की उनकी पहली गर्लफ्रेंड थी। उसके बाद संगीता बिजलानी आईं। फिर मैं उनकी तीसरी गर्लफ्रेंड बनी। ये सिर्फ अफवाहें हैं कि मेरी और सलमान खान की शादी हुई है।

अल्लाह ने मुझे मेरे किए की सजा दे दी

जब मैं सलमान खान की जिंदगी में आई तो संगीता बिजलानी से उनकी शादी के कार्ड पहले ही छप चुके थे। मेरी वजह से वह रिश्ता टूट गया और मुझे इस बात का हमेशा अफसोस रहेगा। जैसा कर्म किया, वैसा ही मैंने भी भुगता। अपने अनगिनत अफेयर्स के साथ और मुझे सलमान के हाथों पिटना पड़ा, गालियां सुननी पड़ी और यौन शोषण भी सहन करना पड़ा।

मैं अपने एनजीओ पर लगातार काम कर रही हूं और पीड़ितों को बचाने के लिए पूरे अमेरिका में घूम रही हूं। मैं मियामी में रहती हूं, लेकिन एक पीड़िता को बचाने के लिए अभी मैं ह्यूस्टन में हूं। मेरा सपना अपने एनजीओ 'नो मोर टीयर्स' भारत में लाने का है। मैं भारत में रिसर्च करना चाहती हूं। मेरे प्रोजेक्ट को आगे बढ़ने नहीं दिया जाता। मुंबई फिल्म इंडस्ट्री के बाकी लोगों को भी मुझसे दूर रहने के लिए मजबूर किया गया।

लोग अपने को खुद क्यों समझते हैं। मेरे एनजीओ पर बनी डॉक्यू-सीरीज Fight Or Flight को बैन कराने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया। उन्होंने ऐसा सिर्फ इसलिए किया क्योंकि दूसरे एपिसोड में मैंने उनका नाम लिया था और उन्हें अपनी इमेज खराब होने का डर था। मुझे डराने और चुप रखने के लिए सभी तरीके इस्तेमाल किए गए। मैं आज तक धमकियां मिलती हैं।

मेरा शो चलने नहीं दिया गया। वह शो बच्चों, महिलाओं, पुरुषों और एलजीबीटीक्यू को शोषण के लिए बेचे जाने पर बनाया गया था। इस शो के जरिए घरेलू हिंसा के पीड़ितों को बचाया जा सकता था। सेक्शुअल एब्जूज के पीड़ितों को मेरे एनजीओ के जरिए मदद की जा सकती थी।

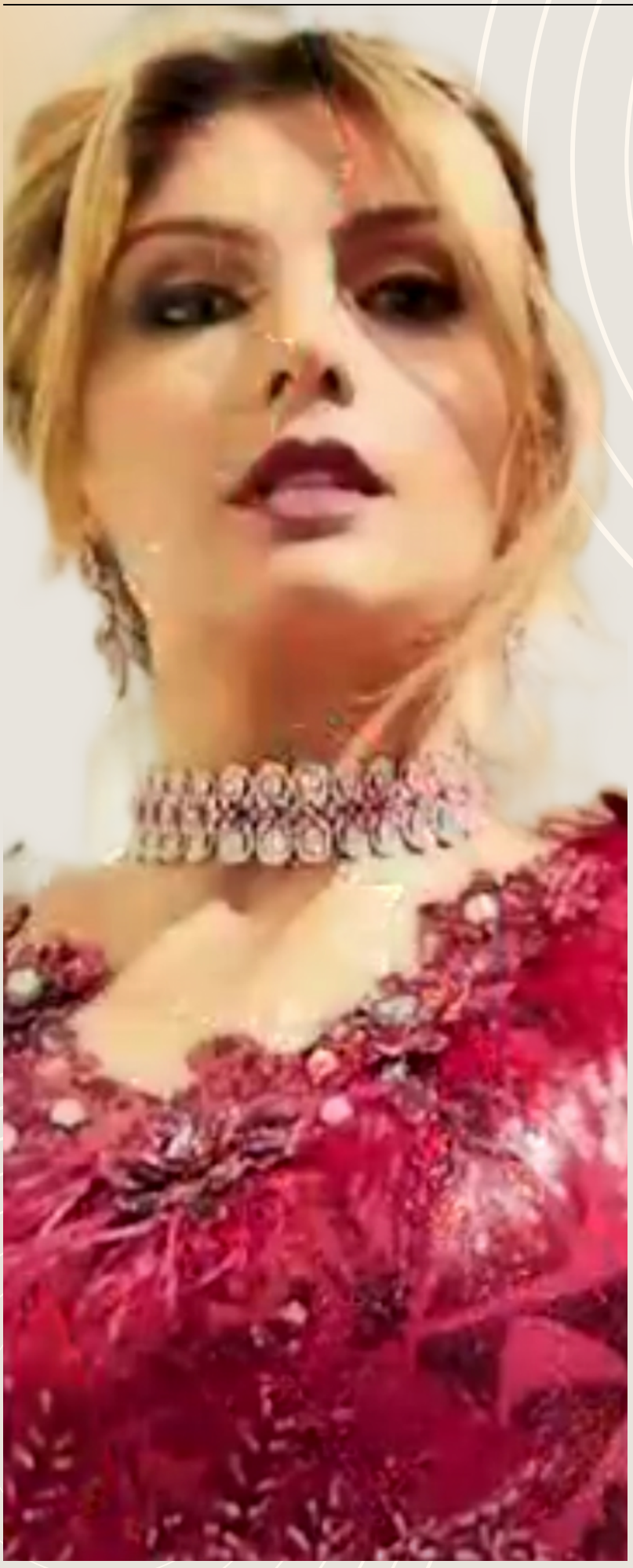

मुझ पर बार-बार आरोप लगाए जाते हैं कि मैं सुर्खियों की भूखी हूं। लेकिन मुझे अमेरिका में प्रेस का हुजूम मिला। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा और जॉर्ज बुश से दो बार राष्ट्रपति पुरस्कार भी मिले। ऐसे में मुझमें लोकप्रियता की भूख कैसे हो सकती हैं।

शाहरुख बेहतरीन इंसान, कंगना का करती हूं सम्मान

मुझे बॉलीवुड के बहुत सारे एक्टर-एक्ट्रेस पसंद हैं, लेकिन जब में छोटी थी तो राजेश खन्ना को बहुत पसंद करती थी। मैं आज भी परवीन बॉबी, जीनत अमान और रेखा को दुनिया की सबसे खूबसूरत महिलाओं में से मानती हूं। फिल्म गंगूबाई में आलिया भट्ट मुझे अच्छी लगीं। मुझे वो किरदार मेरी जिंदगी और मेरे काम के करीब लगता है। शाहरुख खान और कंगना की फिल्में मुझे पसंद हैं। मुझे लगता है दोनों ही अच्छे इंसान हैं।

इंडिया में कुछ अच्छे लोगों से भी मुलाकात हुई

वैसे मुझे इंडिया बहुत पसंद हैं और सबसे बढ़कर वहां का खाना मेरा पसंदीदा है। पूरी दुनिया में मुझे गोवा, राजस्थान और मुंबई की फूड चेन शिव सागर मेरी पसंदीदा जगह है। मुझे भारत के मंदिर और वहां का नेशनल ड्रेस साड़ी बेहद पसंद है। मेरे पापा और मेरे दादा-दादी का जन्म बंबई में ही हुआ था। मेरी दादी और कुछ रिश्तेदार अब भी मुंबई में हैं। मौका मिलने पर मैं मुंबई में छुट्टियां गुजरना चाहूंगी।

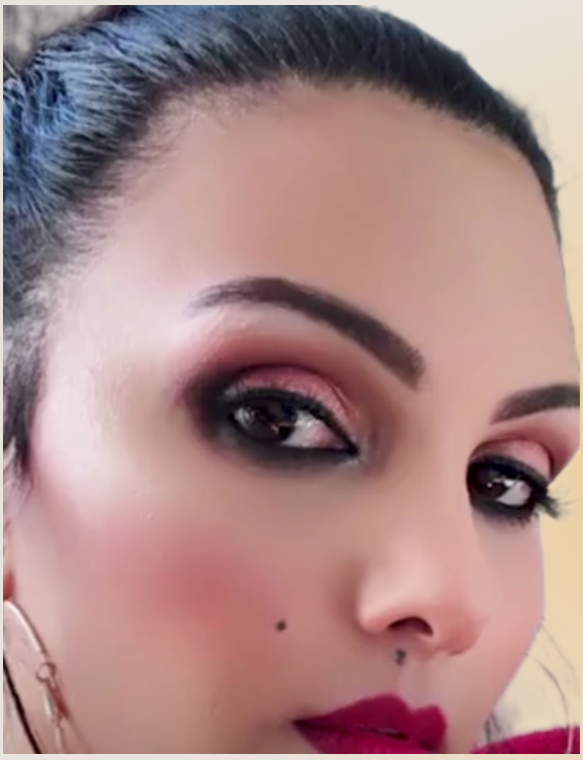

राहुल गांधी ने धर्म पर शेयर किया डेढ़ पेज का लेख

-अंजनी कुमार त्रिपाठी

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और वायनाड से सांसद राहुल गांधी ने हिंदू धर्म को लेकर डेढ़ पन्ने का एक लेख लिखा है. राहुल गांधी ने एक्स (पहले ट्विटर) पर ये लेख शेयर किया है, जिसमें उन्होंने हिंदू होने के असल मायने समझाए हैं. लेख में लिखा है कि हिंदू वही है, जिस शख्स में अपने डर की तह में जाकर महासागर को सत्यनिष्ठा से देखने का साहस है. इस लेख के टाइटल में कांग्रेस नेता ने लिखा है, "सत्यम् शिवम् सुंदरम्."

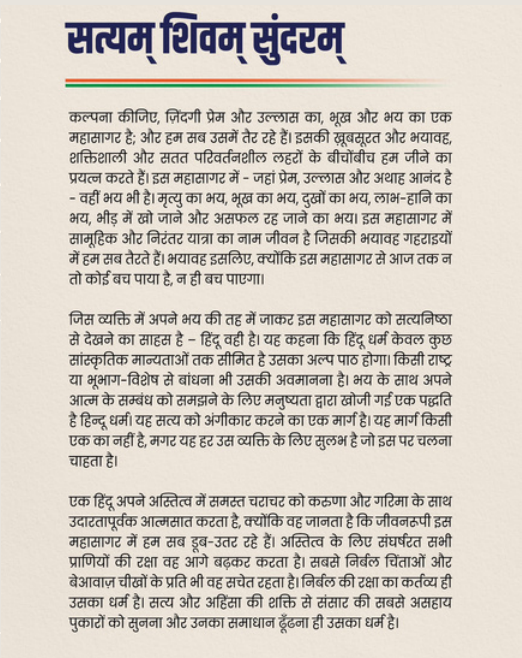

सत्यम् शिवम् सुंदरम्

कल्पना कीजिए, ज़िंदगी प्रेम और उल्लास का, भूख और भय का एक महासागर है; और हम सब उसमें तैर रहे हैं। इसकी ख़ूबसूरत और भयावह, शक्तिशाली और सतत परिवर्तनशील लहरों के बीचोंबीच हम जीने का प्रयत्न करते हैं। इस महासागर में - जहां प्रेम, उल्लास और अथाह आनंद है - वहीं भय भी है। मृत्यु का भय, भूख का भय, दुखों का भय, लाभ-हानि का भय, भीड़ में खो जाने और असफल रह जाने का भय। इस महासागर में सामूहिक और निरंतर यात्रा का नाम जीवन है जिसकी भयावह गहराइयों में हम सब तैरते हैं। भयावह इसलिए, क्योंकि इस महासागर से आज तक न तो कोई बच पाया है, न ही बच पाएगा।

जिस व्यक्ति में अपने भय की तह में जाकर इस महासागर को सत्यनिष्ठा से देखने का साहस है – हिंदू वही है। यह कहना कि हिंदू धर्म केवल कुछ सांस्कृतिक मान्यताओं तक सीमित है उसका अल्प पाठ होगा। किसी राष्ट्र या भूभाग-विशेष से बांधना भी उसकी अवमानना है। भय के साथ अपने आत्म के सम्बंध को समझने के लिए मनुष्यता द्वारा खोजी गई एक पद्धति है हिन्दू धर्म। यह सत्य को अंगीकार करने का एक मार्ग है। यह मार्ग किसी एक का नहीं है, मगर यह हर उस व्यक्ति के लिए सुलभ है जो इस पर चलना चाहता है।

एक हिंदू अपने अस्तित्व में समस्त चराचर को करुणा और गरिमा के साथ उदारतापूर्वक आत्मसात करता है, क्योंकि वह जानता है कि जीवनरूपी इस महासागर में हम सब डूब-उतर रहे हैं। अस्तित्व के लिए संघर्षरत सभी प्राणियों की रक्षा वह आगे बढ़कर करता है। सबसे निर्बल चिंताओं और बेआवाज़ चीखों के प्रति भी वह सचेत रहता है। निर्बल की रक्षा का कर्तव्य ही उसका धर्म है। सत्य और अहिंसा की शक्ति से संसार की सबसे असहाय पुकारों को सुनना और उनका समाधान ढूँढना ही उसका धर्म है।

राहुल गांधी ने लेख में कहा है कि निर्बल की रक्षा का कर्तव्य ही धर्म है.हिंदू अपने अस्तित्व में समस्त चराचर को करुणा और गरिमा के साथ उदारतापूर्वक आत्मसात करता है, क्योंकि वह जानता है कि जीवनरूपी इस महासागर में हम सब डूब-उतर रहे हैं. उन्होंने कहा कियह कहना कि हिंदू धर्म केवल कुछ सांस्कृतिक मान्यताओं तक सीमित है उसका अल्प पाठ होगा. किसी राष्ट्र या भूभाग विशेष से बांधना भी उसकी अवमानना है.

राहुल ने आगे लिखा है, "भय के साथ अपने आत्म के सम्बंध को समझने के लिए मनुष्यता द्वारा खोजी गई एक पद्धति है. हिन्दू धर्म यह सत्य को अंगीकार करने का एक मार्ग है. यह मार्ग किमी एक का नहीं है, मगर यह हर उस व्यक्ति के लिए सुलभ है जो इस पर चलना चाहता है. सत्य और अहिंसा की शक्ति से संसार की सबसे असहाय पुकारों को सुनना और उनका समाधान ढूंढना ही हिंदू का धर्म है."

राहुल ने कहा, "जिंदगी, प्रेम, उल्लास, भूख और भय के महासागर में तैरने के सबके अपने-अपने रास्ते और तरीके हैं. सबको अपनी राह पर चलने का अधिकार है. वह सभी रास्तों से प्रेम करता है, सबका आदर करता है और उनकी उपस्थिति को बिल्कुल अपना मानकर स्वीकार करता है.

बता दें कि राहुल गांधी ने हिंदू धर्म को लेकर यह लेख ऐसे वक्त लिखा है, जब बीजेपी कांग्रेस पर सनातन धर्म को बदनाम और खत्म करने के आरोप लगा रही है. तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बेटे उदयनिधि ने हाल ही में सनातन धर्म के खिलाफ टिप्पणी की थी. स्टालिन की पार्टी डीएमके विपक्षी गठबंधन INDIA का हिस्सा है. इसको लेकर सत्ता पक्ष विपक्ष पर हमलावर है.

बता दें कि राहुल गांधी ने हिंदू धर्म को लेकर यह लेख ऐसे वक्त लिखा है, जब बीजेपी कांग्रेस पर सनातन धर्म को बदनाम और खत्म करने के आरोप लगा रही है. तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बेटे उदयनिधि ने हाल ही में सनातन धर्म के खिलाफ टिप्पणी की थी. स्टालिन की पार्टी डीएमके विपक्षी गठबंधन INDIA का हिस्सा है. इसको लेकर सत्ता पक्ष विपक्ष पर हमलावर है.

एक हिंदू में अपने भय को गहनता में देखने और उसे स्वीकार करने का साहस होता है। जीवन की यात्रा में वह भयरूपी शत्रु को मित्र में बदलना सीखता है। भय उस पर कभी हावी नहीं हो पाता, वरन घनिष्ठ सखा बनकर उसे आगे की राह दिखाता है। एक हिंदू का आत्म इतना कमज़ोर नहीं होता कि वह अपने भय के वश में आकर किसी क़िस्म के क्रोध, घृणा या प्रतिहिंसा का माध्यम बन जाये।

हिंदू जानता है कि संसार की समस्त ज्ञानराशि सामूहिक है और सब लोगों की इच्छाशक्ति व प्रयास से उपजी है। यह सिर्फ उस अकेले की संपत्ति नहीं है। सब कुछ सबका है। वह जानता है कि कुछ भी स्थायी नहीं और संसार-रूपी महासागर की इन धाराओं में जीवन लगातार परिवर्तनशील है। ज्ञान के प्रति उत्कट जिज्ञासा की भावना से संचालित हिंदू का अंतःकरण सदैव खुला रहता है। वह विनम्र होता है और इस भवसागर में विचर रहे किसी भी व्यक्ति से सुनने-सीखने को प्रस्तुत।

हिंदू सभी प्राणियों से प्रेम करता है। वह जानता है कि इस महासागर में तैरने के सबके अपने-अपने रास्ते और तरीके हैं। सबको अपनी राह पर चलने का अधिकार है। वह सभी रास्तों से प्रेम करता है, सबका आदर करता है और उनकी उपस्थिति को बिल्कुल अपना मानकर स्वीकार करता है।

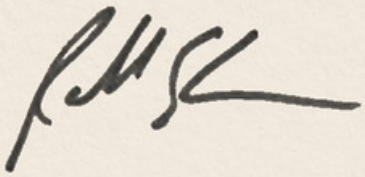

कब तक हसरतों की कब्रगाह बनते रहेंगे कोटा के कोचिंग सेंटर!

-आनंद शर्मा

एक पखवाड़े पहले राजस्थान के कोटा शहर में पीजी में रहने वाली एक 17 साल की स्टूडेंट ने अपने रूम का दरवाजा बंद कर लिया था। मकान मालिक भी उससे दरवाजे खोलने की मिन्नत करता रहा लेकिन उसने इनकार कर दिया। लड़की रात को डिनर के लिए नहीं आई थी, इससे शक बढ़ा। आखिरकार कॉल पर सूचना के बाद होप सोसाइटी के लोग पहुंचे और करीब 1 घंटे तक समझाने-बुझाने के बाद एक काउंसलर उसे दरवाजा खोलने के लिए राजी कर लिया।

होप सोसाइटी एनजीओ के संस्थापक और कोटा के मनोचिकित्सक डॉ. एमएल अग्रवाल कहते हैं, 'लोग उन छात्रों की संख्या को देखते हैं, जिन्होंने आत्महत्या कर ली लेकिन कोई भी उन बच्चों की संख्या को नहीं देखता, जिन्हें बचाया गया है।' हाल ही में, NEET की तैयारी कर रहे यूपी के एक स्टूडेंट ने आत्महत्या कर ली थी जिससे 2023 में कोटा में खुदकुशी करने वाले स्टूडेंट की संख्या बढ़कर 26 हो गई।

इस शहर के लिए ये कोई नई समस्या नहीं है और हर बार जब यह मुद्दा राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में आता है, तब स्थानीय प्रशासन आत्महत्याओं को रोकने के लिए छात्रावासों की बालकनियों में स्प्रिंग-लोडेड पंखे या जाल लगाने जैसे कदम उठाता है। हालांकि, ऐसे लोग और संगठन हैं जो मानते हैं कि इस तरह के तरीके कारगर नहीं हो सकते। इस समस्या का समाधान मेंटल हेल्थ काउंसलिंग में है। मिसाल के तौर पर , होप सोसाइटी दो तरीकों से काम करती है - एक स्टूडेंट या तो हेल्पलाइन नंबर पर कॉल कर सकता है या फिर व्यक्तिगत रूप से क्लिनिक जा सकता है। संगठन का कहना है कि उसने अब तक 11,500 स्टूडेंट्स की मदद की है।

होप सोसाइटी की टीम सभी कॉलों का विवरण दर्ज करती हैं और समस्या की गंभीरता के आधार पर तय करती है कि किस स्तर के हस्तक्षेप की जरूरत है। कुछ मामलों में, टीम ने छात्रों में बाइपोलर डिसॉर्डर और स्किज़ोफ्रेनिया जैसी मानसिक बीमारियों का पता लगाया है। डॉक्टर अग्रवाल कहते हैं, 'ऐसे छात्रों को जब उनके हाल पर छोड़ दिया जाता है तो वे कोटा के दबावों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं।' वह सुझाव देते हैं कि सभी कोचिंग संस्थानों को स्टूडेंट को दाखिला देने से पहले उनकी मानसिक स्वास्थ्य की जांच करनी चाहिए। इस साल जून में, कोटा पुलिस ने भी स्टूडेंट सेल शुरू करने के लिए कार्रवाई की, जो छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य परामर्श प्रदान करती है और उन छात्रों की पहचान करती है जिनमें डिप्रेशन के लक्षण दिखते हैं।

कोटा पुलिस के स्टूडेंट सेल के इंचार्ज ठाकुर चंद्रशेखर कुमार कहते हैं कि उनकी टीम में सादे कपड़ों में भी पुलिस अफसर रहते हैं। वे स्टूडेंट से नियमित तौर पर कैफे या चाय की दुकान जैसे दोस्ताना माहौल में बात करते हैं ताकि उनकी चुनौतियों और परेशानियों को समझ सकें। अगर उन्हें लगता है कि किसी स्टूडेंट में डिप्रेशन के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, तो वे उसे काउंसलर के पास भेजते हैं।

कोटा पुलिस के स्टूडेंट सेल के लिए काम करने वाले एक काउंसलर बताते हैं, 'जब युवा घर से इतना दूर आते हैं और दिन में 16 घंटे से ज्यादा पढ़ाई करते हैं तो अच्छे आवास और भोजन की कमी का उन पर नकारात्मक असर पड़ता है।'

कोटा में प्राइवेट काउंसलर भी हैं, लेकिन उनकी शिकायत है कि मेंटल हेल्थ काउंसलिंग को लेकर उन्हें आमतौर पर कोचिंग संस्थानों का सक्रिय समर्थन नहीं मिलता है। कुछ का आरोप है कि कोचिंग संस्थान उन्हें अपने पोस्टरों या छात्रों को दिए जाने वाले लेक्चर में कहीं भी आत्महत्या शब्द का जिक्र नहीं करने के लिए कहते हैं।

द टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (TISS) ने भी कुछ साल पहले कोटा में छात्रों को मेंटल हेल्थ सर्विस देने की कोशिश की थी, लेकिन वित्तीय सहित तमाम कारणों से प्रोजेक्ट को बंद करना पड़ा।
TISS के ह्यूमन इकोलॉजी स्कूल की असिस्टेंट प्रफेसर अपर्णा जोशी कहती हैं, 'वहां सपोर्ट सिस्टम बहुत कम है और मेंटल हेल्थ सर्विस को कोचिंग सेंटरों के साथ जोड़ना होगा।' जोशी भी कोटा में TISS के उस प्रोजेक्ट का हिस्सा थीं।
स्टूडेंट काउंसलिंग को लेकर हमारे सहयोगी अखबार टाइम्स ऑफ इंडिया के सवालों जवाब में, कोटा के सबसे बड़े संस्थानों में से एक, एलन कोचिंग इंस्टिट्यूट ने कहा कि वे 'नियमित काउंसलिंग सेशंस, पैरेंट–टीचर मीटिंग, वैकल्पिक करियर को लेकर सेशंस के साथ–साथ मॉटिवेशनल और साइकॉलजिकल काउंसलिंग कराते हैं।'
एलन इंस्टिट्यूट ने ये भी कहा कि सेशंस के दौरान, माता–पिता को अपने बच्चों के साइकॉलजिकल इशूज से निपटने के बारे में भी शिक्षित किया जाता है। उन्होंने आगे कहा कि वे स्टूडेंट की भलाई के लिए एक सहयोगी दृष्टिकोण के महत्व को पहचानते हैं और एनजीओ और बाहरी काउंसलर्स की विशेषज्ञता का लाभ उठाते हैं।
इस तरह के तमाम प्रयासों के बावजूद, कुछ स्टूडेंट का कहना है कि उनके पास थेरेपी के लिए समय नहीं है। राजस्थान के झुंझुनू के 17 साल के करण सिंह कोटा में पिछले एक साल से तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया को बताया कि उनका शेड्यूल पूरी तरह से पढ़ाई और रिवीजन से भरा है, जिससे अन्य गतिविधियों के लिए शायद ही कोई समय बचता है। वह कहते हैं, 'कोचिंग सेंटर सोचते हैं कि काउंसलिंग जैसी चीजें सिर्फ समय की बर्बादी हैं।'

राजस्थान में समाचार दर्पण 24 परिवार से जुड़े संपर्क करें
+91 95302 51860, +91 98294 11251

विनाश के सबूत पर सबूत मिल रहे फिर भी विकास का बहाना!

-आत्माराम त्रिपाठी

मानसून ने अपने पीछे तबाही का एक जाना-पहचाना निशान छोड़ दिया है। पिछली बार जब हमने ध्यान दिया था कि जोशीमठ टूट रहा है और डूब रहा है... आठ महीने बाद, न केवल चारधाम सड़क चौड़ीकरण का काम शहर के ठीक नीचे शुरू हो गया है। हालांकि, सरकार रोकथाम का कोई उपाय लागू करने में विफल रही है, जिससे उत्तराखंड उच्च न्यायालय को मुख्य सचिव को तलब करना पड़ा है। इस बार हिमाचल में पहाड़ियां दरक गईं, शहर तबाह हो गए और नदियां उफान पर आ गईं। यानी फिर से उजागर हो गया कि सतत विकास का दावा कितना खोखला है।

सुप्रीम कोर्ट ने 2021 में चारधाम सड़क चौड़ीकरण परियोजना (CDP) में 80% सड़कों को 12 मीटर चौड़ा करने की अनुमति दी थी, जिससे पहाड़ों को काटने का रास्ता खुल गया था। सुप्रीम कोर्ट की ही गठित उच्चस्तरीय समिति ने बताया था कि चारधाम पहले ही अपनी वहन क्षमता (carrying capacities) तक पहुंच चुके हैं, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस रिपोर्ट को अनदेखा कर दिया।

बताया जा रहा है कि हिमाचल में तबाही की वजहें भी उत्तराखंड जैसी ही हैं- अंधाधुंध पर्यटन, जलविद्युत परियोजनाएं और व्यापक सड़क निर्माण, इतना कि हिमाचल सरकार ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) के खिलाफ मामला दर्ज कर दिया है। हिमाचल में मॉनसून काल में 1,200 भूस्खलन हुए, जिन्होंने इतनी ही सड़कों को अवरुद्ध कर दिया। सड़क चौड़ीकरण शुरू होने के बाद चंडीगढ़-मनाली राजमार्ग पर सबसे बुरा असर हुआ। चारधाम वाली गलती फिर से हो गई। इन घटनाओं से यह सवाल फिर से केंद्र बिंदु में आ गया है- क्या यह विकास है? क्या हम यह दिखावा करना जारी रख सकते हैं कि जलवायु परिवर्तन केवल तापमान बढ़ने का नतीजा है? इस साल दायर एक जनहित याचिका में मांग की गई थी बहुत ज्यादा दबाव वाले पहाड़ी क्षेत्रों की वहन क्षमता का अध्ययन किया जाए। इस पर प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली एक पीठ ने संज्ञान लिया।

समिति के अध्यक्ष ने भी कहा था कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए 5.5 मीटर चौड़ी सड़क सबसे अच्छी है। उस समय तक पहाड़ काटने के कारण 200 से अधिक भूस्खलन हो चुके थे। इसके अलावा, पहाड़ काटने से निकले मलबे को नदियों में फेंका गया था, जिससे नदियों का तल ऊंचा हो गया और बाढ़ आ गई।वो वर्ष 2021था। अब दो साल बाद सीमा की ओर जाने वाली सीडीपी की तीनों सड़कों में से गंगोत्री की सड़क सबसे सुलभ है, जबकि बद्रीनाथ और पिथौरागढ़ की सड़कें भूस्खलन से ग्रस्त हैं और अक्सर बंद रहती हैं। ऐसा क्यों है?

सबक

ऐसा इसलिए है क्योंकि 100 किलोमीटर लंबी गंगोत्री घाटी, जिसे 2012 में एक पर्यावरण-संवेदनशील क्षेत्र घोषित किया गया था, एकमात्र ऐसा हिस्सा है जहां सीडीपी सड़क चौड़ीकरण अभी शुरू नहीं हुआ है। इस निर्विवाद प्रमाण से स्पष्ट है कि भूस्खलन का सड़क चौड़ीकरण से संबंध नहीं होने का दावा बिल्कुल बकवास है।पांच साल पहले, याचिकाकर्ताओं ने अपनी जनहित याचिका में चेतावनी दी थी कि पूरे 900 किलोमीटर के रास्ते को बिना सोचे-समझे चौड़ा करना न केवल फालतू है, बल्कि इससे पूरा क्षेत्र भूस्खलन और आपदाओं के प्रति संवेदनशील हो जाएगा। इसलिए, जब यह तर्क दिया जाता है कि विकास को रोका नहीं जा सकता है, और यह कि रोकथाम के उपाय और विज्ञान पर्याप्त होंगे, तो सवाल उठता है, क्या सीडीपी की डिजाइनिंग करने वाले सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच) के इंजीनियरों के एक समूह ने ही हिमालय को तबाह नहीं किया है? और क्या 2018 में एमओआरटीएच के अपने ही इंजीनियरों ने तय नहीं किया था कि 5.5 मीटर की चौड़ाई, पहाड़ी इलाकों के लिए सबसे उपयुक्त है? क्या इस सर्कुलर को इंजीनियरों ने 2020 में संशोधित नहीं किया था जिससे पहाड़ों में 12 मीटर की कटाई की अनुमति दी जा सके और चार धाम परियोजना को हरी झंडी मिल जाए?

यह सब विजन में एक मौलिक अंतर को प्रकट करता है। सरकार और जनता का लालच हिमालय को भी पर्यटकों से भरे, शोरगुल, चकाचौंध, कंक्रीट और भीड़भाड़ का शिकार बना दिया है। उन्हें दुनिया के लिए बढ़ती जलवायु परिवर्तन की चुनौती की कोई फिक्र नहीं। दूसरा विजसन एक शांत, स्थिर हिमालय, गाद से मुक्त नदियों, स्थानीय संस्कृति के संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानने और अच्छे से प्रबंधित पर्यटन का हो सकता है।

चार धाम परियोजना में सड़क चौड़ीकरण की अनुमति देने वाले न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ के फैसले के खिलाफ दायर रिव्यू पिटिशन लंबित है। कुछ सुधार अभी भी किए जा सकते हैं। पहले से ही हुए अतिरिक्त चौड़ीकरण का उपयोग देसी वृक्षों को लगाने और तीर्थयात्रियों के लिए फुटपाथ बनाने के लिए किया जा सकता है, जबकि बिना काटे ढलानों को बचाया जा सकता है। हम ऐसी नीतियां नहीं बना सकते हैं जो व्यवस्थित रूप से पर्यावरण को नष्ट करती हैं, फिर भी स्थायित्व की बात करती हैं। हम बड़े पैमाने पर विनाश की अनुमति नहीं दे सकते बल्कि इसकी जगह वहन क्षमता के अध्ययन का आदेश दे सकते हैं। हम अपने पैरों के नीचे की जमीन को अस्थिर करके राष्ट्रीय सुरक्षा की बात नहीं कर सकते हैं। हम हमेशा अराजकता नहीं रह सकते। ऐसा हुआ तो विकास का पीछा करते-करते विनाश को ही बुलावा देते रहेंगे।

सीमापार से रची जा रही साजिश! मणिपुर हिंसा के बहाने बड़े प्लान की तैयारी

-मोहन द्विवेदी

मणिपुर: भारत का उत्तरपूर्वी राज्य मणिपुर बीते 4 महीने से हिंसा की आग में जल रहा है। 3 मई से दो गुटों में शुरू हुई हिंसा ने देखते ही देखते विकराल रूप ले लिया। न जाने कितने बेघर हुए, कितने ही लोगों की जानें गईं। अभी भी वहां सबकुछ सामान्य नहीं है। केंद्र और राज्य सरकार की कोशिशें भी विफल साबित हो रही हैं। इस बीच राष्ट्रीय जांच एजेंसी NIA ने बड़ा खुलासा किया है। एनआईए ने बताया कि सीमा पार म्यांमार और बांग्लादेश के आतंकवादी संगठन मणिपुर में जातीय हिंसा फैलाकर भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ने की तैयारी में है। इस मामले में 1 को गिरफ्तार भी कर लिया गया है। एनआईए ने शनिवार को मणिपुर के चूड़ांचंदपुर जिले से सेइमलुन गंगटे को गिरफ्तार किया है। इसका संबंध इन्ही आतंकी संगठनों से है।एनआइए मामले की जांच से पता चला है कि म्यांमार और बांग्लादेश में रहने वाले आतंकवादी समूहों ने भारत में उग्रवादी नेताओं के एक वर्ग के साथ साजिश की है।

इसके लिए, मणिपुर में मौजूदा जातीय संघर्ष को भड़काने के लिए, हथियार, गोला-बारूद और अन्य प्रकार के आतंकवादी हार्डवेयर खरीदने के लिए धन प्रदान किया जा रहा है। गिरफ्तार आरोपी गंगटे को नई दिल्ली लाया गया है और उसे संबंधित अदालत में पेश किया जाएगा। एनआईए के प्रवक्ता ने इस बात की पुष्टी की है। इस मामले में एक अन्य आरोपी मोइरांगथेम आनंद सिंह को एनआईए ने 23 सितंबर को गिरफ्तार किया था। इससे पहले, मणिपुर पुलिस ने उन्हें और चार अन्य लोगों को गिरफ्तार किया था, जब वे कथित तौर पर पुलिस की वर्दी में एक वाहन में यात्रा कर रहे थे और उनके पास हथियार और गोला-बारूद थे। पुलिस ने आरोप लगाया कि सिंह पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के एक ओवरग्राउंड कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहा था, जो एक गैरकानूनी मणिपुरी उग्रवादी संगठन है, और उसने चंदेल में बुनियादी सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया था। हालांकि सिंह को उसके चार सहयोगियों के साथ बाद में जमानत मिल गई, लेकिन 23 सितंबर को एनआईए ने उसे फिर से गिरफ्तार कर लिया।

इस एक्ट्रेस ने होटल में काम किया, बदलना पड़ा नाम और आज भोजपुरी सिनेमा की बड़ी स्टार है

-इरफान अली लारी

इस मासूम सी बच्ची को पहचाना? कभी गुजारे के लिए इस बच्ची को होटल और रेस्टोरेंट में काम करना पड़ा था। लेकिन आज इसकी तूती बोलती है और भोजपुरी सिनेमा में एक बड़ा नाम है। इसने हिंदी टीवी शोज और बॉलीवुड में भी काम किया। पर वैसी पहचान और स्टारडम नहीं मिला, जो भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री में जाकर मिला। क्या आप बता सकते हैं कि हम किस एक्ट्रेस की बात कर रहे हैं?

इस लड़की ने शोबिज इंडस्ट्री में उड़िया भाषा के म्यूजिक वीडियो से शुरुआत की थी। बाद में इसने भोजपुरी और हिंदी के अलावा कन्नड़, तमिल और तेलुगू भाषा की फिल्मों में भी काम किया।

यह हैं एक्ट्रेस Monalisa, जिन्हें आज भोजपुरी की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हीरोइनों में गिना जाता है। मोनालिसा का असली नाम अंतरा बिस्वास है। लेकिन करियर में सफलता नहीं मिली, तो उन्होंने नाम बदल लिया। फिल्मों में आने से पहले मोनालिसा को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। उन्होंने कोलकाता के कुछ होटल और रेस्टोरेंट में गेस्ट रिलेशंस एक्जीक्यूटिव की नौकरी की। इसके बाद उनकी एक्टिंग की दुनिया में एंट्री हुई।

मोनालिसा ने कुछ हिंदी फिल्में भी कीं। बॉलीवुड में उन्होंने अजय देवगन स्टारर 'ब्लैकमेल' से डेब्यू किया था। इसी बीच कुछ साउथ की फिल्मों में भी किस्मत आजमाई और फिर भोजपुरी फिल्मों में चली गईं। यहां मोनालिसा ने खूब नाम कमाया। अपने अबतक के करियर में मोनालिसा ने 200 से भी ज्यादा भोजपुरी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और उड़िया भाषा की फिल्मों में काम किया।

मोनालिसा आज की तारीख में एक भोजपुरी फिल्म के लिए 35 से 40 लाख रुपये लेती हैं। वह हिंदी 'नमक इश्क का', 'नजर', 'दिव्य दृष्टि', 'नजर 2' जैसे हिंदी टीवी सीरियलों के अलावा 'बिग बॉस 14' में नजर आईं। फिलहाल मोनालिसा हिंदी टीवी शो 'बेकाबू' में नजर आ रही हैं।

'हर मंच की गरिमा अलग होती है' पीएम मोदी के बयान पर टीएस सिंहदेव का जवाब

-रघु यादव मस्तूरी

बिलासपुर में जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने छत्तीसगढ़ के डेप्युटी सीएम टीएस सिंहदेव की तारीफ की थी। पीएम मोदी ने कहा था कि छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री ने सच बोला तो कांग्रेस में तूफान खड़ा हो गया। दरअसल, पीएम मोदी ने टीएस सिंहदेव के रायगढ़ की सभा में दिए गए बयान का जिक्र किया था। पीएम मोदी के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए टीएस सिंहदेव ने कहा दो अलग मंच होते हैं। जिसमें हम भी अलग-अलग तरह से बोलते हैं।

उन्होंने कहा कि एक शासकीय कार्यक्रम का मंच होता है, उसमें एक अलग शिष्टाचार सभी जनप्रतिनिधि निभाते हैं। एक राजनीतिक मंच होता है जिसमें फिर तीर चलते हैं। केंद्र और राज्य सरकार के साझा मंच की एक अलग गरीमा रहती है। राजनीतिक मंच में हम लोग भी बहुत कुछ बोलते हैं वो बात सामने नहीं आ रही।

क्या कहा था पीएम मोदी ने

बिलासपुर में जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा था कि, छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री सार्वजानिक सभा में कह चुके हैं कि दिल्ली अन्याय नहीं करती है। उप मुख्यमंत्री ने सच बोला तो कांग्रेस में तूफान खड़ा हो गया, उन्हें फांसी पर लटकाया जाने लगा। पीएम मोदी ने कहा था कि केंद्र सरकार, राज्य के विकास के लिए पैसे देने में कोई भेदभाव नहीं करती है। केंद्र से जो पैसा आता है वह पैसा यहां कि कांग्रेस सरकार के कारण लटका रहता है या फिर बहुत धीरे-धीरे चल रहा है।

बता दें कि पीएम मोदी 14 सितंबर को छत्तीसगढ़ के रायगढ़ पहुंचे थे। यहां एक सरकारी कार्यक्रम के जरिए पीएम मोदी ने राज्य को करोड़ों रुपए की सौगात दी थी। छत्तीसगढ़ सरकार की तरफ से राज्य के डेप्युटी सीएम टीएस सिंहदेव ने इस कार्यक्रम में शिरकत की थी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए टीएस सिंहदेव ने कहा था कि मैं अपने अनुभव से कहता हूं कि केन्द्र सरकार ने कभी भेदभाव नहीं किया है।

कोटा लिपस्टिक और बॉब-कट हेयरस्टाइल वाली महिलाओं को लाएगा आगे

-मंजू सिंह

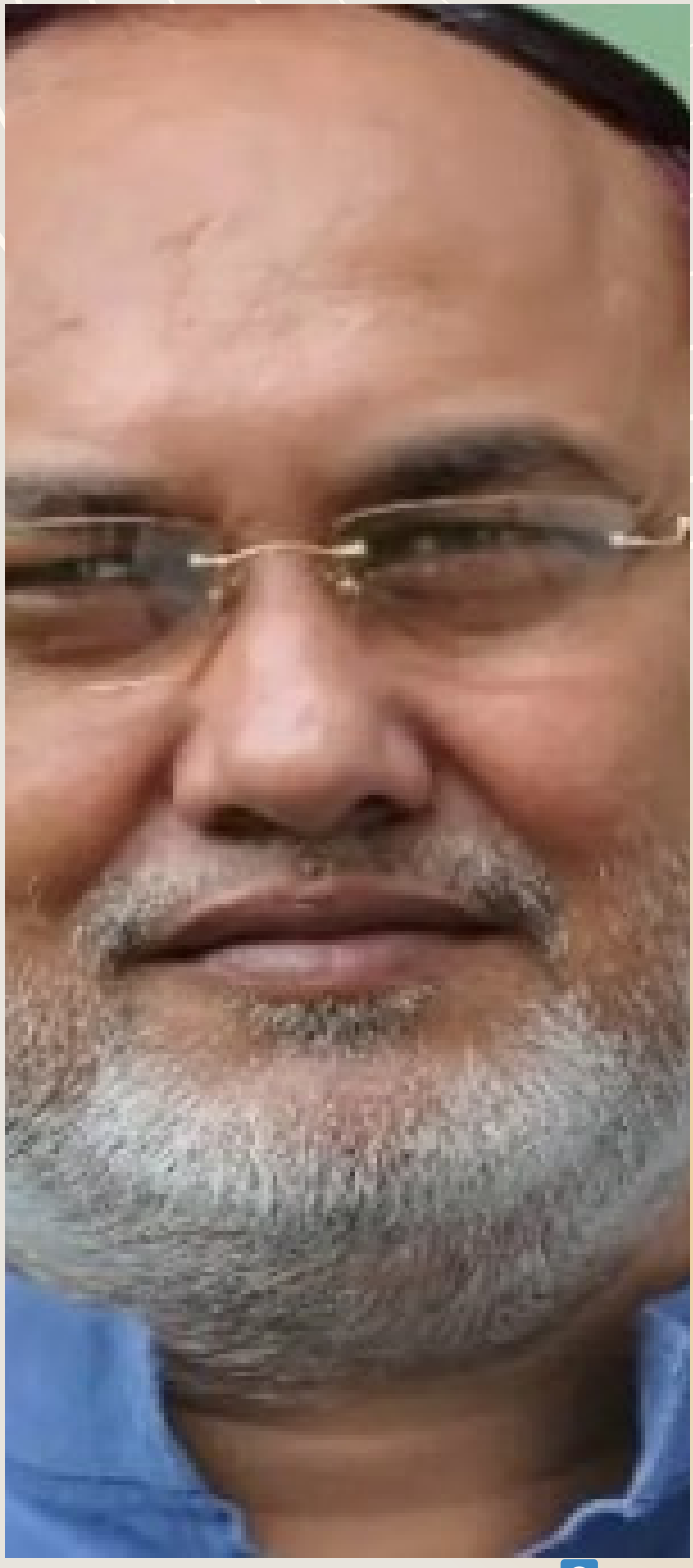

हाल ही में विवाद को जन्म देने वाले एक बयान में, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के वरिष्ठ नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी ने महिला आरक्षण विधेयक के बारे में चिंता व्यक्त की, जो हाल ही में एक विशेष संसदीय सत्र के दौरान राज्यसभा में पारित हुआ।

बिहार के मुजफ्फरपुर में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, सिद्दीकी ने टिप्पणी की, "लिपस्टिक और बॉब-कट हेयर स्टाइल वाले लोग महिला आरक्षण के नाम पर आगे आएंगे। सरकार को इसके बजाय पिछड़े समुदायों की महिलाओं के लिए आरक्षण प्रदान करना चाहिए।"

सिद्दीकी की टिप्पणियों की विभिन्न हलकों से आलोचना हुई है। बीजेपी सांसद सुनीता दुग्गल ने बयान की निंदा करते हुए कहा, "यह उनकी संकीर्ण मानसिकता को दर्शाता है। महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। ऐसे बयान देना उनकी असभ्य मानसिकता को दर्शाता है। वे चाहते हैं कि महिलाएं केवल घरेलू काम करें और बाहरी दुनिया में योगदान न दें।"

झामुमो सांसद महुआ माजी ने भी ऐसे बयानों से बचने की जरूरत पर जोर दिया जो महिलाओं को आहत कर सकते हैं। "हम आज 21वीं सदी में हैं। ऐसे बयान देने से बचना चाहिए, जिससे महिलाओं को ठेस पहुंचे। हम भी चाहते हैं कि पिछड़े वर्ग की महिलाएं आगे आएं। हम महिला वर्ग में एससी, एसटी और महिला आरक्षण बिल में ओबीसी महिलाएं के आरक्षण की भी बात कर रहे हैं।"

अपनी टिप्पणी का बचाव करते हुए, सिद्दीकी ने बाद में स्पष्ट किया कि उनके बयान का उद्देश्य "ग्रामीण लोगों के लिए समझने में आसानी" था और नुकसान पहुंचाने का कोई इरादा नहीं था। इस बीच, उन्होंने अपने समर्थकों से आगामी लोकसभा चुनाव के समापन तक टेलीविजन और सोशल मीडिया के अत्यधिक सेवन से परहेज करने का आग्रह किया। उन्होंने सलाह दी, "अपने दिमाग का इस्तेमाल किए बिना टीवी देखना और सोशल मीडिया पर समय बिताना बंद करें।"

90 सीटों पर कांग्रेस का 'भरोसा यात्रा', गावों और पंचायतों को किया जाएगा टारगेट

-हरीश चंद्र गुप्ता

छत्तीसगढ़ में सत्तारूढ़ कांग्रेस अपनी सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में लोगों को जानकारी देने के लिए चुनावी राज्य के सभी 90 विधानसभा क्षेत्रों में दिनभर 'भरोसा यात्रा' (विश्वास मार्च) निकालेगी। छत्तीसगढ़ कांग्रेस इकाई के संचार विंग के प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने एक बयान में कहा कि महात्मा गांधी की जयंती पर आयोजित होने वाले मार्च के दौरान, उनकी पार्टी भी लोगों तक पहुंचेगी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को बेनकाब करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि "अपने 15 साल के शासन (2003-2018) के दौरान उसने राज्य के लोगों को धोखा दिया।

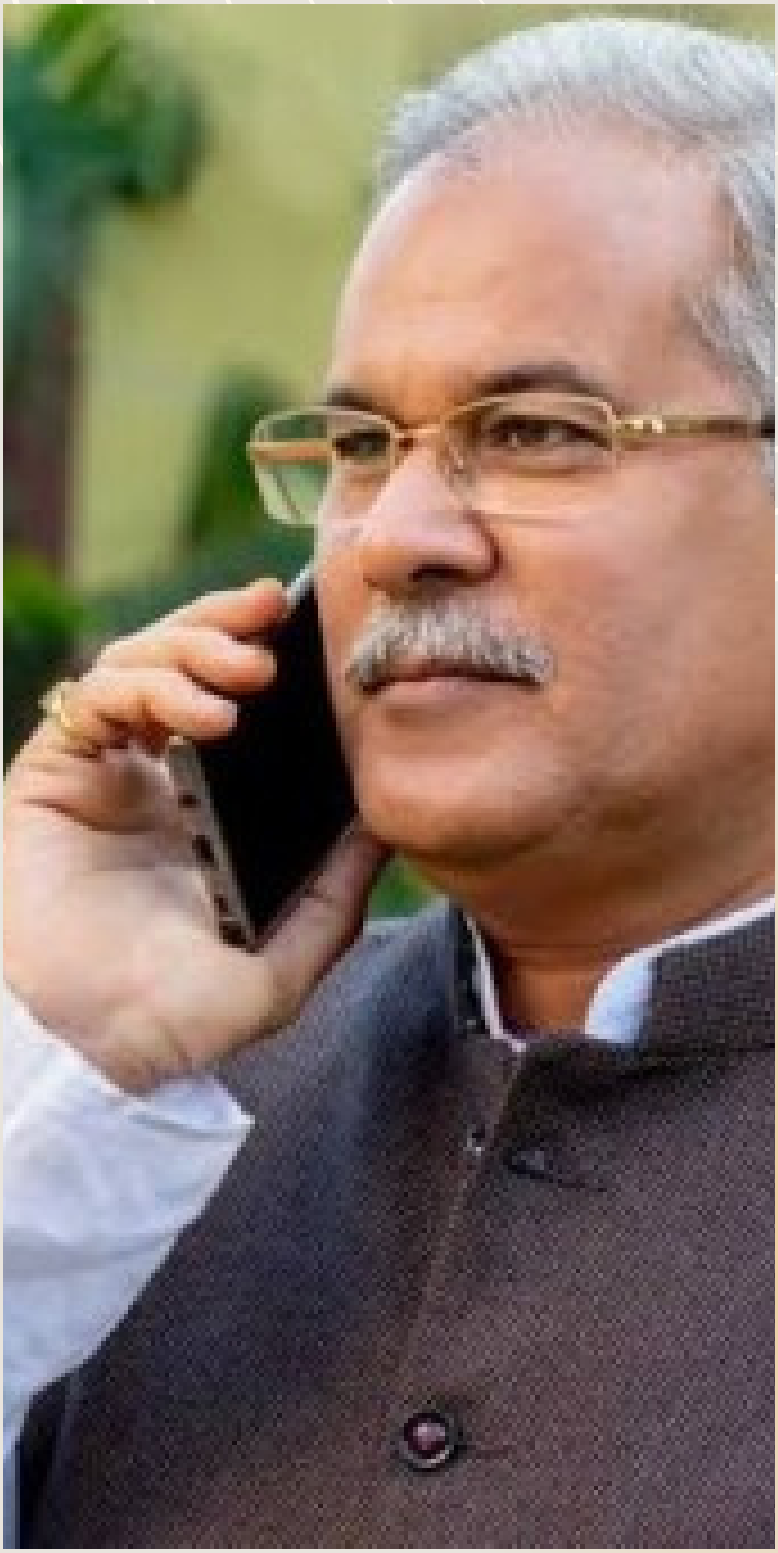

उन्होंने कहा, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, उनके कैबिनेट सहयोगी, कांग्रेस विधायक और सांसद अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में मार्च में हिस्सा लेंगे। शुक्ला ने कहा, चार पहिया वाहनों और मोटरसाइकिलों पर निकाली जाने वाली यात्रा प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में 25-30 किलोमीटर की दूरी तय करेगी, जिसके दौरान 'नुक्कड़ सभा' और सार्वजनिक बैठकें आयोजित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि मार्च के दौरान अधिक से अधिक गांवों और पंचायतों को कवर करने का प्रयास किया जाएगा। छत्तीसगढ़ में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं।

राज्य सरकार ने पिछले कुछ महीनों में विभिन्न स्थानों पर 'भरोसे का सम्मेलन' आयोजित किया और इसमें कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी की वरिष्ठ नेता प्रियंका गांधी वाड्रा भी शामिल हुईं। कार्यक्रम के दौरान 'भूपेश है तो भरोसा है' और 'भरोसे की सरकार' जैसे नारे लगाए गए। विपक्षी भाजपा ने शनिवार को बिलासपुर शहर में अपनी दो 'परिवर्तन यात्राएं' संपन्न कीं, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समापन समारोह को संबोधित किया। पहली परिवर्तन यात्रा 12 सितंबर को दंतेवाड़ा (दक्षिणी छत्तीसगढ़) से निकाली गई थी और दूसरी 15 सितंबर को जशपुर (उत्तरी छत्तीसगढ़) से निकाली गई थी।

विज्ञापन

G.M. ACADEMY

QUALIFIED STUDENTS FOR
JEE-MAINS (2023)

ADMISSION OPEN

YOUR CHILD
DESERVE
THE BEST
EDUCATION

Interactive & Engaging Activities

- Excellent Education
- Smart Classes
- Extra curriculum
- Special Doubt Classes

SCHOLARSHIP

About Our Campus

NEW SCHOOL is a friendly, welcoming school where children are happy and enjoy learning.
Our vision is to grow GREAT citizens, empowered to live successfully in their personal and global lives.

Contact us : 9450682334, 8354035608, 8174870720.

मेरे जैसा भैया नहीं मिलेगा, जब चला जाऊंगा तब याद आऊंगा।

-दुर्गा प्रसाद शुक्ला

सीहोर: मध्यप्रदेश के सीएम शिवराज सिंह चौहान ने विधानसभा चुनाव से पहले बड़ा संकेत दिए हैं। सीहोर जिले के एक कार्यक्रम में सीएम ने कहा कि जब मैं चला जाऊंगा तब बहुत याद आऊंगा। सीएम का यह बयान राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बना हुआ है। दरअसल, रविवार को सीएम शिवराज सिंह चौहान सीहोर जिले के लाड़कुई में मुख्यमंत्री चरण पादुका योजना अंतर्गत तेंदूपत्ता संग्राहकों के लाभार्थियों से चर्चा कर रहे थे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम ने कहा– ऐसा भैया मिलेगा नहीं, जब में चला जाऊंगा तब तुम्हें याद आऊंगा।

मध्यप्रदेश में अभी दो महीने बाद ही विधानसभा के चुनाव होने हैं। चुनाव से पहले अटकलें लगाई जा रही हैं कि अगर राज्य में फिर से बीजेपी की सरकार बनती है तो शिवराज सिंह चौहान को सीएम नहीं बनाया जाएगा। बीजेपी ने अपनी दूसरी लिस्ट में प्रदेश के कई दिग्गजों को टिकट दिया है। 3 केन्द्रीय मंत्री और 7 सांसदों को चुनाव मैदान में उतारने से अटकलें और तेज हो गई हैं। शिवराज सिंह चौहान 2005 से मध्यप्रदेश के सीएम हैं। 2018 में 15 महीनों के लिए कांग्रेस की सरकार बनी थी उसके बाद 2020 में शिवराज सिंह फिर से सीएम बने थे।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मैंने मध्यप्रदेश में राजनीति की परिभाषा बदल दी है। मेरे लिए राजनीति का अर्थ जनता की सेवा है और जनता की सेवा ही मेरे लिए भगवान की पूजा है। मैं सरकार नहीं परिवार चलाता हूं, आप सब मेरे परिवार का हिस्सा है। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा है कि मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना के तहत बहनों को हर महीनें 1250 रूपए की राशि प्रतिमाह सीधे उनके खाते में हस्तांतरित की जा रही है।

मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर कई सर्वे समाने आए हैं। इन सर्वे रिपोर्ट में बीजेपी–कांग्रेस के बीच कांटे की टक्कर दिखाई दे रही है। इसी बीच शिवराज सिंह चौहान का ऐसा बयान कई संकेत दे रहा है। हालांकि सियासत के मझे हुए खिलाड़ी माने जाने वाले शिवराज सिंह चौहान ने चुनाव से पहले ऐसा बयान क्यों दिया है इसे लेकर अटकलें तेज हो गई हैं।

कांग्रेस पहले से ही सीएम शिवराज के खिलाफ हमलावर है। कांग्रेस लगातार दावा कर रही है कि इस चुनाव के बाद राज्य में कांग्रेस की सरकार बनेगी। सीएम शिवराज सिंह चौहान का यह बयान कांग्रेस के लिए सियासी मुद्दा बन सकता है।

संत कबीर की नगरी....

-चुन्नीलाल प्रधान

संत कबीर नगर 5 सितंबर 1 99 7 को बनाया गया है। यह जिला संत कबीर दास की गतिविधियों का क्षेत्र था और इसलिए इसका नाम "संत कबीर नगर" रखा गया है। जिला संत कबीर नगर की स्थापना पूर्व जिला बस्ती के तहसील खलीललाबाद, तहसील बस्ती के 131 गांवों और जिला सिद्धार्थ नगर के तहसील बांसी के विकास खंड सांथा के सभी 161 गांवों को जोडा गया हैं।

जिला प्रशासन की सीट खलीलाबाद में है। कुशल प्रशासन प्रदान करने के लिए जिला प्रशासनिक रूप से 03 तहसीलों में विभाजित हैं, अर्थात् मेहदावल, खलीलाबाद और घनघटा। विकास योजना के कार्यान्वयन और निगरानी के लिए जिला को 9 विकास ब्लाकों में विभाजित किया गया है, अर्थात् साथा, मेहदावल, बघौली, सेमरियाव, खलीलाबाद, नाथ नगर, हैसर बाजार, बेलहर कला और पाली (बेलहर कला और पाली 2001 की जनगणना के बाद नव निर्मित हैं)। जिले का कुल क्षेत्रफल 1646.0 वर्ग किमी है । ग्रामीण क्षेत्र में 1620.0 वर्ग किमी और शहरी 26.0 वर्ग किमी है। जिले में 1582 बस्ती वाले गांवों के साथ 794 ग्राम पंचायत और 1726 राजस्व गांव हैं और जिले में 144 निर्जन गांव हैं। सांविधिक कस्बों में 01 नगर पालिका परिषद और 07 नगर पंचायतों का समावेश है।

खलीलाबाद पहले बस्ती का हिस्सा था खलीलाबाद का पुराना नाम रगड़गंज था। खलीलाबाद के स्टेट बाबू लल्लू राय रईस थे। जो की बिधियानी गांव के निवासी थे, जिन्होंने अपनी जमीन पर रगड़गंज बाजार की स्थापना किया। बाबू लल्लू राय रईस के वंशज आज भी बिधियानी गांव में है। जिनका नाम राजा विनोद राय है। ये बाबू लल्लू राय रईस के चौथे वंशज राजा विनोद राय है।

खलीलाबाद का प्राचीन बाजार हरीहरपुर था । बाबू लल्लू राय रईस ने बाद में खलीलाबाद बाजार बसाया बाजार लगाने के लिए सभी को कर देना पड़ता था। कुछ साहूकार व मारवाड़ी ने अपने नाम के आगे राय जोड़ा जैसे कि प्रहलाद राय छपडिया, बाबू लल्लू राय रईस ने अगेंजो के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने खलीलाबाद के स्टेशन का दरवाज़ा अपने गांव के तरफ करवाया था जो कि आज भी है। बिधियानी की तीनो सड़क आज भी बाबू लल्लू राय रईस के नाम से है।

महादेव मंदिर: खलीलाबाद से आठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित तामा गांव में महादेव मंदिर स्थित है। यह मंदिर भगवान तामेश्वर नाथ को समर्पित है। लोककथा के अनुसार मंदिर में स्थित मूर्ति तामा के समीप स्थित जंगल से प्राप्त हुई थी। राजा बंसी द्वारा इस प्रतिमा को मंदिर में स्थापित किया गया था। प्रत्येक वर्ष शिवरात्रि के अवसर पर यहां बहुत बड़े मेले का आयोजन किया जाता है। काफी संख्या में भक्त इस मेले में सम्मिलित होते हैं।

मगहर: यह शहर जिला मुख्यालय के दक्षिण-पश्चिम में लगभग सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह वही स्थान है जहां संत कवि कबीर की मृत्यु हुई थी। इस जगह पर संत कवि कबीर की एक समाधि और एक मस्जिद स्थित है। इस मस्जिद में हिन्दू और मुसलमान दोनों ही पूरी श्रद्धा के साथ यहां आते हैं। 1567 में नवाब फिदाय खान ने इस मस्जिद का पुनर्निर्माण करवाया था।

बखीरा: यह जगह गोरखपुर जिले से लगभग 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। विशेष रूप से यह जगह विशाल मोती झील के लिए जानी जाती है। माना जाता है कि इस झील का नाम नवाब सादत अली खान ने रखा था। सादत अली कभी-कभार इस जगह पर शिकार करने के लिए आया करते थे। बखीरा में लगने वाला बाजार भी काफी प्रसिद्ध है। इस बाजार में पीतल और कांसे से जुड़े काम की मांग सबसे अधिक रहती है। इसी कारण मिर्जापुर, वाराणसी और मुरादाबाद आदि जगहों से थोक विक्रेता इस जगह पर खरीददारी के लिए आते हैं।

लहुरादेवा : अब तक के अनुसंधान के अनुसार च्चावल का प्रयोग सबसे पहले चीन में हुआ था। पुरातात्विक और भाषाई साक्ष्य के आधार पर अब तक वैज्ञानिक सहमति यह थी कि चावल को पहली बार चीन में यांग्त्ज़ी नदी बेसिन में लगभग 8 हजार साल पहले उत्पादित किया गया था। जहाँ से प्रवासन और व्यापार के माध्यम से बाद में यह समूची दुनिया फैल गया । परन्तु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की निगरानी में वर्ष 2000 से 2009 तक इस स्थान पर खुदाई से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों की कार्बन डेटिंग के आधार पर पाया गया कि चावल की खेती सबसे पहले चीन नही अपितु भारत मे इसी स्थान पर की गई थी । इसके अलावा भारत में मिट्टी के बर्तनों अर्थात मृदभांड (सिरेमिक) का इतिहास भी दुनिया मे सबसे पुराना है। क्योकि यहीं दुनियाभर में सबसे प्राचीन मृदभांड भी पाए गए। दरअसल यह भी चीन नही शायद भारत की इसी धरती की देन है | लहुरादेवा (अक्षांश 26°46'12" उत्तर; देशांतर 82°56'59" पूर्व) भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में ऊपरी गंगा के मैदान के सरयूपुर (ट्रांस-सरयू) क्षेत्र में संत कबीर नगर जिले में स्थित है । सरयूपर का मैदान पश्चिम और दक्षिण में सरयू नदी , उत्तर में नेपाली तराई और पूर्व में गंडक नदी से घिरा है।

खलीलाबाद: खलीलाबाद, संत कबीर नगर जिले का मुख्यालय है। जो कि बाद में बाबू लल्लू राय रईस के द्वारा बसाया गया बाजार रगड़गंज को रगड़गंज खत्म कर के बाद में इस जगह की स्थापना काजी खलील-उर-रहमान ने की थी। उन्हीं के नाम पर इस जगह का नाम खलीलाबाद रखा गया था। वर्तमान समय में यह जगह विशेष रूप से हाथ से बने कपड़ों के बाजार के लिए प्रसिद्ध है। इस बाजार को बरधाहिया बाजार के नाम से जाना जाता है।

हैंसर: प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय में हैंसर, सूर्यवंशी लाल जगत बहादुर से सम्बन्धित था। स्वतंत्रता संग्राम में लाल जगत बहादुर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रत्येक मंगलवार और शुक्रवार के दिन यहां साप्ताहिक बाजार लगता है। इस जगह का क्षेत्रफल केवल 91.4 हैक्टेयर है। हैसर बाजार के क्षेत्र मे एक गॉव भरवल परवता है जो कफि मसहुर है।

हशेश्वरनाथ मंदिर: खलीलाबाद से तीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैंसर गांव में महादेव जी का मंदिर हशेश्वरनाथ धाम स्थित है। यह मंदिर भगवान तामेश्वर नाथ को समर्पित है। प्रत्येक वर्ष शिवरात्रि के अवसर पर यहां बहुत बड़े मेले का आयोजन किया जाता है। काफी संख्या में भक्त इस मेले में सम्मिलित होते हैं।

धर्मसिंहवा बाजार: धर्मसिंहवा बाजार संतकबीर नगर का बहुत ही पुराना कस्बा है। मेहदावल तहसील में स्थित इस कस्बे की कुल आबादी लगभग 15000 की है। यहाँ पर मौजूद पुरातात्विक अवशेष आज भी अपने अस्तित्व को पाने के लिये तरस रहे हैं। बताया जाता है कि गौतम बुद्ध जब सत्य की खोज के लिये जा रहे थे, वे यहाँ पर रूक कर विश्राम किये थे। यहाँ एक बोद्धस्तूप भी मौजूद है। यह कस्बा जिला मुख्यालय से 50 किमी दूर जनपद के उत्तरी सीमा पर स्थित है। इस कस्बे से दो किमी के दूरी के बाद जनपद सिद्धार्थ नगर की सीमा शूरू हो जाती है। धर्मसिंहवा में थाना, बैंक, इन्टर कालेज, होम्योपैथिक अस्पताल,

कटका : यह संत कबीर नगर ज़िले के प्रमुख दर्शनीय स्थानों में से एक है। यह प्रसिद्द धार्मिक स्थल तामेश्वरनाथ से 3 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है | यहाँ पर चारो तरफ गहरी खाई के बीच में एक प्राचीन स्थल आज भी विद्यमान है। जिसे "कटका-कोट" के नाम से जाना जाता है। इसी परिसर में बाँसी के राजा की आराध्य देवी समय माता का प्राचीन "समय-मंदिर" भी स्थित है।

अमरडोभा: लेडुआ महुआ अमरडोभा संतकबीर नगर का एक तारीखी कसबा है यह एक बुनकरों का मुख्य असथान है!इस की कुल आबादी लगभग 10000 की है। जिसमें 75% के लगभग मुसलिम समुदाय के लोग है। यहाँ का गमछा बहुत मशहूर है। यहाँ हैनडलोम बहुत है जिससे गमछा चादर धोती कुरता और लुनगी यदि चीजें बनाई जाती है। यहाँ एक अरबी फारसी मदरसा बोर्ड उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त दारुलउलूम अहलेसुंनत तनवीरुल इस्लाम अमरडोभा डिग्री कालेज है। जिसमें हिन्दुस्तान के कई राज्य के बच्चे पढ़ते है। यहाँ बुधवार को बाजार लगता है जो इलाके का बड़ा बाजार है। यह कसबा जिला मुख्यालय से 18 कीमी के दूरी पर जनपद के उत्तर में है। यहाँ जोनियर हाई स्कूल, इनटर कालेज, सहज सेवा केंद्र, अस्पताल मौजूद हैं।

सिकरी तकियावा मुहर्रम मेला आयोजित होता है ये जिला मुख्यालय से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है सईं बुजुर्ग': मुख्यालय से 20 किलोमीटर उत्तर यह गाँव स्थित है, इस गाँव की कुल आबादी लगभग 7000 है। यहाँ के ग्राम प्रधान का नाम किताबी देवी है। यहाँ सभी तरह के लोग रहते हैं। इस गाँव मे एक मदरसा भी है जिसका नाम दारुल उलूम अहले सुन्नत मिस्बाहुल उलूम है। इस मदरसे में कक्षा 5 तक की पढ़ाई होती है। इस गाँव के सभी छात्र होनहार हैं।

बंजरिया : यह गांव खलीलाबाद शहर से लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मुख्यतः यह गांव मशहूर पहलवान इनामुल हक खान और मशहूर समाजसेवी जावेद अहमद उर्फ चिथरू खान के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि चिथरू खान जय सिंह के वंशज थे जिनकी मजार जय सिंह दादा के नाम से बाकरगंज गांव से सटे शहीदवारे में स्थित है।

FILM HOUSE
VISHNU HARI AS
DIAMOND SINGH
Aam Aadmi SCAMMED 2700 Crore
A FILM WRITTEN BY
HARI VISHNU
PRODUCER - AJAY GAUTAM DIRECTOR - HARSHVARDHAN SANWAL
CO PRODUCERS - SUMIT TOMAR & HARSHVEER SRIVASTAVA EX PRODUCER - SOORAJ BHARTI
CREATIVE DRIECTOR - HARI VISHNU & SAHITH SARKAR & JATINDER B MUSIC - MEET
- VAIBHAV CHAVAN & KARAN SINGH & ROHIT TIWARI PROJECT DESINGER - HARSHVEER SHRIVASTAVA
DOP - MURLY & DEEPAK SINGH & AJINKYA PARAB ASSOCIATE DOP - VAIBHAV CHAVAN
PRODUCTION - M SHEKHAR SCREENPLAY & DIALOGUES - HARI VISHNU & ANUBHAVA SHRIVASTAVA
LINE PRODUCER - AMIT TALWAR 9 & DEEPANSHU TOMAR & MAYUR SINGH CASTING - CYRIL RAJ
HINDI TELUGU TAMIL MALAYALAM KANNADA MARATHI

समाचार दर्पण 24

हिंदी पाक्षिक पत्रिका